सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-18 22 सितम्बर से 6 अक्तूबर, 2013 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

मुजफ्फरनगर क्षेत्र में भड़के साम्प्रदायिक दंगों व सरकारों द्वारा जानबूझ कर बरती गई कोताही पर एसयूसीआई(सी) ने जतायी गहरी चिन्ता, भ्रातृघाती खूँरेजी रोकने के लिए तुरन्त कदम उठाने की मांग और हर तरह की फूटपरस्त उत्तेजना व भड़कावे के खिलाफ एकजुट खड़े होने का लोगों से किया आह्वान

एसयूसीआई (सी) महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 9 सितम्बर 13 को निम्नलिखित बयान जारी किया:

मुजफ्फरनगर यू.पी. में विगत 13 दिनों से जारी साम्प्रदायिक दंगों पर हम गहरी चिन्ता का इजहार करते हैं जिसमें सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 26 लोगों मारे गए और अनेक गंभीर रूप से घायल हुए हैं। ऐसे साम्प्रदायिक दंगों के भड़कने की आशंका पहले से ही थी क्योंकि आगामी संसदीय चुनावों के परिप्रेक्ष्य में घोर हिन्दू-साम्प्रदायिक संघ परिवार और बीजेपी ने अपने हिन्दुत्व के एजेण्डे को पुनर्जीवित कर दिया है, इनका एकमात्र उद्देश्य है साम्प्रदायिक तौर पर विभाजित यू.पी. में वोट बटोरना, सांसदों की संख्या के हिसाब से इस राज्य का बहुत महत्व है। सरकार-प्रशासन की तरफ से इस उन्माद को रोकने में पूरी तरह विफल हो जाने पर भी हम क्षुब्ध हैं, अब यह मेरठ, गाजियाबाद और सहारनपुर जैसे सटे हुए इलाकों में भी फैल रहा है जिससे स्थिति और भी विस्फोटक हो गई है। यह विश्वास करने का कोई विश्वसनीय कारण नहीं है कि अत्याधुनिक हथियारों और संबद्ध ढांचागत समर्थन से लैस सेना और अर्धसैनिक बल जिन्हे दूर दराज के किसी अगम्य क्षेत्र में प्रवेश के लिए 24 घण्टे की भी जरूरत नहीं होती है वे बहुत से दंगा प्रभावित गांवों में प्रवेश नहीं कर सके और स्थिति को नियन्त्रण में नहीं ला सके। यह सिर्फ दिखाता है कि न तो एसपी-नीत राज्य सरकार और न ही कांग्रेस-नीत केन्द्र सरकार की इस आग को बुझाने की कोई असल मंशा थी बल्कि तमाम प्रमुख वोट-बटोरू बुर्जुआ पार्टियाँ साम्प्रदायिक या जातिवादी-संकीर्णतावादी-अलगाववादी उग्र-राष्ट्रवादी लाइनों पर ऐसी भ्रातृघाती खूँरेजी और दोनों पक्षों के लिए घातक झगड़ों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में भड़कने देना चाहती हैं ताकि वे अपने-अपने वोट बैंकों को पैदा कर सकें, पनपा सकें और खास मकसद के लिए इन्हें इस्तेमाल कर सकें और इस शोषणमूलक पूँजीवादी व्यवस्था से पैदा हो रही जीवन की ज्वलंत समस्याओं पर संयुक्त सशक्त जनवादी आन्दोलन के पनपने और विकसित होने की संभावना का गला घोंटने के घृणित उद्देश्य से लोगों की एकता और भाईचारे को बाधित करके शासक दमनकारी पूँजीपतियों के वर्ग स्वार्थ की सेवा कर सकें।

हम दृढ़तापूर्वक मांग करते हैं कि केन्द्र और राज्य दोनों सरकारों की तरफ से कारगर कदम उठाए जायें, इन रक्तरंजित दंगों को रोका जाए, सामान्य हालात और लोगों के अन्दर भरोसा बहाल किया जाए, विभिन्न समुदायों के बीच मैत्री कायम की जाए, भड़काने वाले अपराधियों को हिरासत में लिया जाए, उन्हें सख्त सजा दी जाए और पीड़ितों तथा पीड़ित परिवारों को उचित मुआवजा दिया जाए। हम जाति-धर्म या नस्लीय भेदभाव किए बिना लोगों के मेहनतकश तबकों से भी जोरदार अपील करते हैं कि वे शासक वर्ग-पोषित वोट के सौदागरों द्वारा बिछाए गए फूट परस्ती के जाल में न फंसे, किसी अफवाह पर ध्यान न दें, जनता के एक तबके को दूसरे खिलाफ खड़ा करने को घृणित बुर्जुआ साजिश को समझें जिसका उद्देश्य है उनकी एकता में दरार डालना, अपने बीच एकता को मजबूत करें और जीवन की बेहद जरूरी मांगों पर सतत सशक्त संयुक्त जनवादी आन्दोलन का निर्माण करके इन तमाम घृणित कदमों को विफल करें।

भोपाल में एआईडीएसओ के 8वें अखिल भारतीय सम्मेलन ने जनविरोधी शिक्षा नीतियों के खिलाफ आवाज बुलन्द की, दीर्घस्थाई आन्दोलन की शपथ ली

एआईडीएसओ के बुलावे पर 8वें अखिल भारतीय छात्र सम्मेलन के अवसर पर भारत की लघुकृति बन गया था भोपाल। भारत के 26 प्रान्तों से आये हजारों छात्रों ने इस शहर में पहुँचने के लिए लम्बी दूरियाँ तय की थी और सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए इसकी सड़कों पर मार्च किया था। उन्होंने विभिन्न भाषाओं में नारे और बैनर बुलन्द किये। जो रैलियाँ उन्होंने निकाली वे जुझारू जज्बे से लबरेज और अपने मकसद के प्रति अनुशासन और दृढ़ निष्ठा से भरपूर थी। भोपाल के लोग जिन्होंने बहुत सी बड़ी रैलियाँ देखी थी, लेकिन निकट अतीत में सीपीआई(एम)-सीपीआई व अन्य छद्म वामपंथी पार्टियों के आन्दोलन से विमुख होने की वजह से उन्हें भूल गये थे, इन्कलाब जिन्दाबाद के बुलन्द नारों की आवाज एक बार फिर सुन सके थे। उन्होंने हैरत के साथ देखा कि कैसे एआईडीएसओ वालन्टियरों द्वारा महीने भर चलाये गये अभियान की परिणति शिक्षा पर हो रहे हमलों के खिलाफ अभेद्य आन्दोलन के गठन और जबरदस्त शक्ति प्रदर्शन में हो रही थी। 26 अगस्त को दोपहर 12 बजे खुले अधिवेशन के लिए मुख्य रैली 'चन्द्रशेखर आजाद मैदान' (दशहरा मैदान, टी टी नगर) से शुरू हुई। इसके आगे-आगे एक सुसज्जित झांकी चल रही थी। सामने सम्मेलन की घोषणा का एक बैनर था। उसके पीछे आठ वालन्टियर एआईडीएसओ के आठ लाल झण्डे उठाये चल रहे थे। उनके पीछे एआईडीएसओ के नेतागण मार्च कर रहे थे। उनके पीछे चार-चार की पंक्तियों में रैली चल रही थी जिसमें छात्राएं सबसे आगे थी और बाकी सब अपने-अपने राज्यों के बैनरों के पीछे चल रहे थे। उत्तराखण्ड के तबाह हुए क्षेत्रों से आये छात्र भी इसमें शामिल थे। वे उनके राज्य में चल रहे बचाव-राहत कार्यों और मेडिकल कैम्पों में शामिल थे और वहीं से सीधे आये थे। शारीरिक रूप से अशक्त दृष्टिहीन छात्र बंगाल से आये थे, दिल्ली का एक छात्र, मुंशी अपनी व्हील चेयर पर आया था। वे सभी क्रान्तिकारी जोश के साथ चल रहे थे।

जैसा कि पिछले सभी अवसरों पर हमारा तजुर्बा रहा है, भोपाल सम्मेलन की तैयारी में भी हमें रुकावटों का सामना करना पड़ा। आम छात्रों और लोगों के भारी समर्थन को देखकर राज्य की बीजेपी सरकार और इसके आका बीजेपी-आरएसएस बुरी तरह बौखला गये और उन्होंने इसे बाधित करने, यहाँ तक कि विफल करने की कोशिश में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने इजाजत देने के बावजूद रैली को रद्द करने के लिए एआईडीएसओ के नेतृत्व पर दबाव डाला, खुले अधिवेशन के दिन ही छात्रों और अध्यापकों को भी शामिल करते हुए सरकारी कार्यक्रमों की घोषणा कर दी गई ताकि उन्हें सम्मेलन में शामिल होने से रोका जा सके, उन्होंने रैली के लिए पहले दिये गये रूट को भी निरस्त कर दिया और शहर के बाहरी सुनसान इलाकों से गुजरने वाला लम्बा रूट दिया। फिर भी उत्साह से भरपूर विशाल रैली हुई जिसका शहरवासियों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

पहली रात को हुई भारी बारिश ने मैदान को गीला और कीचड़ भरा कर दिया था जिसमें बैठना मुश्किल था। फिर भी जोश में कोई कमी नहीं आई। मैदान में एआईडीएसओ द्वारा देश भर में किये गये छात्र आन्दोलनों की चित्र प्रदर्शनी और दुनिया के महापुरुषों की उद्धरण प्रदर्शनी लगाई गई थी। दोनों प्रदर्शनियों ने छात्रों में भारी जिज्ञासा पैदा की।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

26 अगस्त को भोपाल में एआईडीएसओ के 8वें अखिल भारतीय छात्र सम्मेलन के अवसर पर विशाल रैली को सम्बोधित करते हुए एसयूसीआई(सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती

वस्तुगत हालात का तकाजा है कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा स्थापित व पृष्ठपोषित क्रान्तिकारी पार्टी को तेजी से मजबूत करें – *कॉमरेड माणिक मुखर्जी*

(पार्टी की केरल राज्य कमेटी के तत्वावधान में 5अगस्त को कालीकट में हुई कॉमरेड शिवदास घोष स्मरण सभा में एसयूसीआई(सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी द्वारा दिया गया भाषण)

आप सभी जानते हैं कि किस उद्देश्य से एसयूसीआई(सी) पार्टी गठित हुई थी और उन दिनों किन हालात में यह नई कम्युनिस्ट पार्टी बनानी पड़ी थी। कॉमरेड शिवदास घोष ने निसंशय समझ लिया था कि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया नामधारी जो पार्टी थी वह एक सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी थी और यह पार्टी किसी भी रूप में जन आन्दोलन खड़ा करके कभी सही मायने में क्रान्ति की अगुआई नहीं कर सकती है। इस सच्चाई को समझ कर ही उन्होंने एक सही कम्युनिस्ट बनाने का संघर्ष शुरू किया था। उनके साथ थे मुट्ठी भर सहयोद्धा और सामने थी लेनिन की यह सीख कि सही सिद्धांत, सच्ची क्रान्तिकारी पार्टी और सही मूल राजनीतिक लाइन के बिना किसी भी देश में क्रान्ति नहीं हो सकती। इस सच्चाई को आधार बना कर ही उन्होंने यह पार्टी निर्मित की और कार्यकर्ताओं की तादाद के पहलू से हमारी पार्टी देश की बड़ी वाम पार्टियों में से एक है। आम तौर पर एमएलए-एमपी की संख्या से किसी पार्टी की ताकत का हिसाब लगाया जाता है। उनके बारे में हम यह कहना चाहते हैं कि रूस में क्रान्ति से पहले उस देश की पार्लियामेंट में बोल्शेविक सदस्यों की संख्या अत्यंत नगण्य थी। फिर भी उस देश में लेनिन की पार्टी और बोल्शेविकों ने क्रान्ति की थी। इसलिए एक क्रान्तिकारी पार्टी की ताकत महज एमएलए-एमपी की तादाद से नहीं बल्कि उन्नत वैचारिक स्तर से लैस कार्यकर्ताओं की तादाद से आंकी जाती है। इसलिए हमारी पार्टी में वर्ग संघर्ष और जन आन्दोलन गठित करने के साथ-साथ नेता व कार्यकर्ताओं का क्रान्तिकारी जीवन निर्मित करने के संघर्ष पर मुख्य महत्व दिया जाता है। इसकी ज्यादातर जरूरत मध्यम वर्गीय परिवारों से जो सब कार्यकर्ता आये हैं उनके लिए है। मध्यम वर्गीय संस्कृति छोड़ कर उन्हें सर्वहारा संस्कृति को अपनाना होगा। यही असली और सबसे महत्वपूर्ण संघर्ष है जो हमें सफलता के साथ चलाते जाना होगा। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आधार पर पार्टी गठन के समय ही कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था कि राजनीति, अर्थव्यवस्था, व्यक्तिगत सम्बन्ध, यौन सम्बन्ध सहित जीवन के तमाम मामलों में ही मार्क्सवादी दृष्टिकोण हमें अपनाना होगा और तमाम मामलों में सभी का दृष्टिकोण एक ही तरह का होगा। ये अपनाये बिना हम वर्ग-च्युत नहीं हो सकते, हम अनिवार्यतः पेटी बुर्जुआ ही रह जाएंगे। इसलिए पार्टी के गठनकाल से ही कॉमरेड शिवदास घोष ने इस खास पहलू पर जोर दिया था। आज उनके स्मरण दिवस पर यह बात याद रखने की जरूरत है।

एक क्रान्तिकारी पार्टी के अन्दर भी बुर्जुआ व्यक्तिवाद रहता है। इस वास्तविक सच्चाई को स्वीकारना ही होगा। अगर हम इस वास्तविकता को नहीं स्वीकार सके तो इससे लड़ नहीं सकेंगे। इस व्यक्तिवाद के खिलाफ बड़ी गभीरता से जोर देकर संघर्ष करना होगा और इस क्षेत्र में कोई समझौता नहीं चलेगा। मैं एक क्रान्तिकारी बनना चाहता हूँ यानी मैं एक उन्नत सर्वहारा रुचि और नैतिक मान प्रतिफलित कर रहा हूँ जिसका आधार है सर्वहारा संस्कृति। हमारे में से अनेक ही मध्यम वर्गीय, निम्न मध्यम वर्गीय परिवारों से पार्टी में आये हैं। इसलिए जाहिर है कि बुर्जुआ चिन्तन प्रक्रिया और बुर्जुआ जीवनशैली हमें बहुत ज्यादा प्रभावित करती है। यह होता है, इससे चिन्तित होने की कोई बात नहीं है। लेकिन जो करना जरूरी है वह है : हमें सचेत रूप से पार्टी के सहयोग से उसे दूर करने के संघर्ष में लगना होगा। यह अन्दरूनी संघर्ष है, कमी-खामियों के खिलाफ लड़ाई चलाते हुए चरित्र के स्तर को उन्नत करने का संघर्ष, जिसे तेज करने का आह्वान दिवंगत महासचिव कॉमरेड नीहार मुखर्जी करके गये थे। स्तर ऊंचा उठाने का संघर्ष चलाते समय अपनी सीमाबद्धताओं को चिन्हित करना होगा और उन्हें दूर करते हुए आप भारत में क्रान्ति लाने का महान दायित्व निभाने के लायक हो जाएंगे। आज के दिन ये मामले अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि ऐसी बात नहीं है कि अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन में बुर्जुआ व्यक्तिवाद सिर्फ सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी में ही था। दूसरी-दूसरी पार्टियों में भी था। इसने इन सभी पार्टियों की मूल प्राणसत्ता, यानी मजदूर वर्ग की चारित्रिक विशेषता, को खत्म कर दिया था। आप जानते हैं कि चीन की सांस्कृतिक क्रान्ति की प्रशंसा करते हुए भी कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि समाजवादी व्यवस्था में भी व्यक्तिवाद किस तरह रह जाता है। इसे उन्होंने 'समाजवादी व्यक्तिवाद' की संज्ञा दी थी। उसी समय ही उन्होंने आगाह किया था कि अगर इसे दूर नहीं किया गया तो यह प्रतिक्रान्तिकारी प्रक्रिया को ही तेज करेगा। दुःख की बात है कि वही हुआ। हमारा मानना है कि इस मामले का किसी ने भी इस तरह विश्लेषण नहीं किया, यह कॉमरेड शिवदास घोष का ही एक योगदान है।

रूस में यह समस्या अलग तरह की थी। 1948 से ही कॉमरेड शिवदास घोष बार-बार इस विषय में कहते आये थे। अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन की क्या-क्या कमियाँ-सीमाबद्धताएं थी? अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन का एक हिस्सा होते हुए ही वे अक्सर कहा करते थे कि मैं अपनी आत्म आलोचना के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन के नेतृत्व की आलोचना कर रहा हूँ और उस विषय में मेरा जो दायित्व है उसका पालन करूँगा। जिसे मैं गलत मानता हूँ, वह मुझे दिखाना चाहिए। 1948 से ही वे कहते आये थे कि अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन में यांत्रिक चिन्तन प्रक्रिया ही हावी है और द्वन्द्वात्मक चिन्तन प्रक्रिया नदारद होती जा रही है। सबसे पहले इस प्रक्रिया को सुधारने पर ही उन्होंने जोर दिया था। दूसरे, उन्होंने दिखाया था कि सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी उन दिनों सबसे बड़ी पार्टी होने से दूसरी-दूसरी बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा हर मामले में महज उसी की हाँ में हाँ मिला दिये जाने से विभिन्न मुद्दों पर स्वस्थ तर्क-वितर्क और द्वन्द्वात्मक चर्चा-बहस नहीं हो पाती है जो बिल्कुल स्वास्थ्यकर बात नहीं है। नतीजतन, एक तरह की अंध स्वीकृति व्याप्त है जिसे वे एक बहुत भारी कमी मानते थे। एक ऐसी धारणा ही उस समय बन गई थी कि सोवियत नेतृत्व की आलोचना करने का मायने ही है क्रान्ति का विरोधी हो जाना। ख्रुश्चेव के शासन काल में तो आलोचना करने वालों को वस्तुतः क्रान्ति-विरोधी करार दे दिया जाता था। पार्टी में आलोचना की लेनिनीय धारणा क्या है? पार्टी के कार्यकर्ता नेतृत्व की आलोचना इस उद्देश्य से करेंगे कि उससे नेता की त्रुटि सुधरे, पार्टी का सुधार हो और क्रान्ति की प्रक्रिया तेज हो। अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन में भी इसी पद्धति का अनुसरण किया जाना चाहिए। नेतृत्व को मानते हुए और अनुसरण करते हुए सब पार्टियों के बीच वैचारिक संघर्ष और आदान-प्रदान चलता रहना चाहिए। यह द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध जीवन्त हो। वर्ना यान्त्रिक चिन्तन पद्धति हावी हो जाएगी जो असल में हावी हो भी गई। यहाँ कॉमरेड घोष ने इस विषय की व्याख्या की और विचार को उन्नत किया कि आलोचना के इस संघर्ष के क्षेत्र में आलोचना आत्म आलोचना से शुरू करनी होगी, यही आधार बात होनी चाहिए।

कॉमरेडस, मैं जो चर्चा कर रहा हूँ, वह सैद्धान्तिक मामला लग सकता है। लेकिन यहाँ जो हाजिर हैं, वे सभी पार्टी कॉमरेड हैं और कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षा के सैद्धान्तिक पहलुओं का अनुशीलन किये बिना हम खुद को असली क्रान्तिकारी नहीं बना पायेंगे। क्रान्तिकारी बनने की हमारी हर एक की आकांक्षा है। लेकिन केवल इच्छा होने से कोई क्रान्तिकारी नहीं बन सकता। इसके लिए हमें एक सुनिश्चित पद्धति का अनुसरण करना होगा, जो एक इन्सान बनाती है। अगर वह पद्धति सही है, तो उसका फल भी सही होगा। पद्धति गलत होगी तो उसका नतीजा भी नकारात्मक होगा। इसलिए सिर्फ आज ही नहीं, बल्कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सैद्धान्तिक पहलुओं का लगातार गंभीरता से अनुशीलन करने की जरूरत है। कॉमरेड शिवदास घोष भारत की सरजमीं पर एकमात्र कम्युनिस्ट पार्टी एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) को निर्मित करने के रास्ते मार्क्सवाद-लेनिनवाद को विशेषीकृत, विस्तृत व्याख्या और विकसित करते हुए एक उन्नत समझदारी के स्तर पर ले गये हैं।

हमें याद रखना होगा कि हम एक पूँजीवादी समाज में रह रहे हैं। इस समाज में हम उत्पादन व्यवस्था और उत्पादन सम्बन्ध के साथ एक मायने में लगातार सहयोग देते जा रहे हैं। वहाँ से बहुत सारे दूषित सोच-विचार और बुराइयाँ हमारे मनो के अन्दर अचेत रूप में ही घुस रही हैं। सचेत रूप से उन्हें ढूंढ़ निकालना और उनका खात्मा कर डालना हमारा लाजिमी फर्ज है। उन्हें खत्म नहीं कर पाये तो वे हमारे मन में गहरी जड़ जमा लेंगे, हमें ही खत्म कर देंगे और आखिरकार हमारी क्रान्तिकारी बनने की आकांक्षा को ही मार देंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हम ट्राटस्की, काउटस्की जैसे एक समय के बड़े-बड़े क्रान्तिकारियों को देखते हैं जो आखिरकार अधोपतित हो गये थे और प्रतिक्रान्तिकारी हो गये थे। चीन में भी हमने देखा कि देंग श्याओ पिंग ने किस तरह क्रान्तिकारी राजनीति को ध्वस्त कर दिया और उस देश में प्रतिक्रान्ति कर दी। इसीलिए आजकल कई लोग कहते हैं कि क्रान्ति कपोल कल्पना है, आप ला नहीं सकते। सोवियत यूनियन विफल हो गया, चीन विफल हो गया और छोटे से क्यूबा और उत्तर कोरिया को छोड़ कर और कहीं भी आप समाजवाद नहीं देखते हैं। हम समझते हैं, इस बात से जनता मात्र अपनी हताशा को ही प्रकट कर रही है। जनता पूँजीवाद को पसंद नहीं करती है। वह समाजवाद चाहती है, लेकिन वह समाजवाद को साक्षात देख नहीं पा रही है। समाजवाद के लिए उनकी चाह लगातार बढ़ती जा रही है और यह आजकल बड़ी सक्रिय है।

आप जानते हैं कि मैं हाल ही में उत्तर कोरिया की राजधानी पियोंगयांग गया था उस देश के मुक्तियुद्ध की विजय की 60वीं सालगिरह मनाने के समारोह में। वहाँ से वापसी के रास्ते चीन गया था। वहाँ जिसमें ज्यादातर जिस्म दिखाई दे ऐसी अंटसंट पोशाक पहने चीनी लड़कियों को देखा। ये ही एक दिन समाजवादी देश के नागरिक थे। जरा कल्पना कीजिए कि प्रतिक्रान्ति ने उस देश की संस्कृति को कितना तबाह कर दिया है! वे आज यौनता और हिंसा से भरी जघन्य साम्राज्यवादी संस्कृति के शिकार हो गये हैं। दुनिया में कितनी बड़ी-बड़ी कम्युनिस्ट पार्टियाँ थी, वर्तमान वे असल में ढह चुकी हैं। थोड़े से कुछ ग्रुप फिर एकजुट होने की कोशिश कर रहे हैं और सही राजनैतिक लाइन खोज रहे

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्थिक-सामाजिक-नैतिक संकट से बचना है तो पूँजीवाद उखाड़ फेंक कर समाजवाद चाहिए

कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति दिवस की सभा में कॉमरेड प्रभाष घोष

(5 अगस्त को कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में कोलकाता में रानी रासमणि अवेन्यू में एक विशाल जनसभा आयोजित हुई। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई(सी) पश्चिम बंगाल राज्य सचिव कॉमरेड सौमेन बसु ने की। मुख्य वक्ता थे पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष। उनका पूरा भाषण प्रकाशित किया गया है।)

कॉमरेड अध्यक्ष, कॉमरेडस और दोस्तो,

आज हम भारत के 22 राज्यों में इस देश के नवजागरण और आजादी आन्दोलन की क्रान्तिकारी धारा के सुयोग्य प्रतिनिधि, महान मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन- स्टालिन-माओ त्से-तुंग के यर्थाथ उत्तराधिकारी, इस युग के विशिष्ट मार्क्सवादी चिन्तनकार, विश्व साम्यवादी आन्दोलन के अन्यतम नेता और भारत के सर्वहारा मुक्ति आन्दोलन के पथप्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष को याद कर रहे हैं। हमें जिनको इस महान नेता के सम्पर्क में आने का मौका मिला, उनके स्नेह से जिनका लालन-पालन हुआ, हमारे लिए यह दिन बहुत ही व्यथा-वेदना का दिन है। हम इस दिन इकट्ठे हो कर उनकी क्रान्तिकारी शिक्षाओं को याद करते हैं और उनसे रास्ता पाते हैं। यह हमारे लिए महज एक औपचारिकता नहीं है। हम जिस दिन नहीं रहेंगे उस दिन भी इस देश के और विदेशों के लाखों लाख मुक्तिकामी शोषित लोग और क्रान्तिकारी योद्धा इस महान नेता को याद करेंगे।

मैं पहले पहल आज से 48 साल पहले की उनकी कही एक बात याद कराना चाहता हूँ। उन्होंने कहा था कि 18वीं 19वीं शताब्दी में राजतंत्र के खिलाफ बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति संगठित की गई थी, समता मैत्री स्वतंत्रता का उदात्त आह्वान किया गया था, संसदीय लोकतंत्र कायम किया गया था, व्यक्ति-स्वाधीनता, नारी-स्वाधीनता का नारा दिया गया था, वह युग था पूँजीवाद के संघर्ष का युग, राष्ट्रीय क्रान्ति संगठित करने का युग। तब बुर्जुआ वर्ग के तौर पर प्रगतिशील था। सामाजिक विकास में उसकी क्रान्तिकारी भूमिका थी। उन्होंने कहा था कि बाद में 20वीं शताब्दी की शुरूआत में, जब से छोटी, मझौली पूँजी की जगह एकाधिकारी पूँजी का जन्म हुआ, वित्तीय पूँजी का जन्म हुआ, साम्राज्यवाद का जन्म हुआ, उसी बुर्जुआ वर्ग ने आजादी और लोकतंत्र के झण्डे को धूल में फेंक दिया। व्यक्ति-स्वाधीनता और नारी-स्वाधीनता का गला घोंट दिया। इस स्तर में बुर्जुआ ने वर्ग के तौर पर और पूँजीवाद ने एक व्यवस्था के तौर पर प्रतिक्रियावादी चरित्र अख्तियार कर लिया। एक समय जिस बुर्जुआ वर्ग ने संसदीय लोकतंत्र का आह्वान किया था, 'डेमोक्रेसी-बाई द पिपल, फोर द पिपल और ऑफ द पिपल', अब नहीं रही, इस साम्राज्यवादी स्तर में बुर्जुआ डेमोक्रेसी हो गई-'बाई द कैपिटलिस्ट, फोर द कैपिटलिस्ट, ऑफ द कैपिटलिस्ट', जनता के नाम पर पूँजीपतियों द्वारा, पूँजीपतियों के लिए और पूँजीपतियों की ही। फलस्वरूप एक समय संसदीय लोकतंत्र की जो सब जनमुखी विशेषताएं थी, वे सब मायनों में विसर्जित हो गई और धूल में मिल गई। यह अधोपतित संसदीय लोकतंत्र ही एक खण्डित रूप में पश्चिम बंगाल में आपने पंचायत चुनाव में प्रत्यक्ष देखा है। बुर्जुआ लोकतंत्र में 'निर्बाध और निष्पक्ष चुनाव' बहुत दिनो का नारा है। आज उसका वीभत्स रूप देखा। नृशंस हत्याकाण्ड, घर-बार जला डालना, लूट-खसोट, महिलाओं की इज्जत-आबरू लूटना, उम्मीदवार होने के जुर्म में उसके पिता का कत्ल कर देना, नामांकन पत्र पेश न करने देना, जमा न करने देना, वोट न डालने देना, बूथों पर कब्जा करना, सभी कुछ लोकतांत्रिक चुनाव के नाम पर प्रायोजित किया गया है। जिसे देख कर आप शिहिर उठे हैं। ऐसी बात नहीं है कि यह इस बार नये तृणमूल शासन में ही सिर्फ हुआ है, इससे पहले सीपीआई(एम) ने 34 साल के राज में इस संत्रास का मार्ग प्रशस्त किया है। उनके समय भी बार-बार यही सब हुआ है।

सीपीआई(एम) के हाथों 1969 में शुरू हुआ राजनैतिक कत्लोगारत

मैं जरा पिछे नजर पसार कर देखता हूँ, अब की पीढ़ी उस घटना से वाकिफ नहीं है। राजनीति में कत्लोगारत, राजनैतिक हत्याकाण्ड पचास के दशक में, साठ के दशक में इस राज्य में नहीं था। चुनाव में भी नहीं था। राजनैतिक खूनखराबा, हत्याकाण्ड शुरू हुआ 1969-70 में द्वितीय संयुक्त मोर्चे के अन्तिम दौर में। तब इस राज्य में हमारी पार्टी सहित 14 वाम और जनवादी पार्टियों का गठबंधन के रूप में संयुक्त मोर्चा बना था, चुनाव जीतने पर वह गठबंधन सरकार ही चल रही थी। उसी समय सीपीआई(एम) नेतृत्व ने वर्ग आधारित मोर्चे का नारा दिया, जिसका मायने था सीपीआई(एम) नेतृत्व में इस राज्य में 'वर्ग संघर्ष' इतना आगे बढ़ गया है कि विभिन्न पार्टियों की एकता पर आधारित मोर्चे या गठबंधन की जरूरत खत्म हो गई है, मजदूर वर्ग का अपना वर्गगत मोर्चा गठित करने का वास्तविक आधार तैयार हो गया है। इसे 'वर्गगत मोर्चे' के गठन की जरूरत से सीपीआई(एम) ने हमारी पार्टी सहित दूसरी-दूसरी पार्टियों के खिलाफ 'वर्ग संघर्ष' शुरू कर दिया यानी हमारी पार्टी, दूसरी-दूसरी शरीक पार्टियों और उनकी पार्टी से निकल कर आये नक्सल कार्यकर्ताओं का खून करना शुरू कर दिया। इसी से इस राज्य में खूनखराबा शुरू हुआ। इसके बाद सिद्धार्थ राय का शासन आया। इसी रास्ते सिद्धार्थ राय ने हमारी पार्टी और दूसरी वामपंथी पार्टियों के कार्यकर्ताओं और नक्सलों का खून करना शुरू किया। तब सीपीआई(एम) ने आवाज उठानी शुरू की कि संत्रास हो रहा है, लोकतंत्र खत्म हो रहा है, यह सब कहा। 1972 में संत्रास और चुनावों में धांधली कर कांग्रेस सत्ता में आई। इसके बाद इन्दिरा गांधी की इमरजैन्सी और उसके संत्रास के खिलाफ लोकतंत्र बहाली का वायदा करके सीपीआई(एम) 1977 में चुनाव जीत कर आई। इसके बाद 34 साल के शासनकाल में आपने देखा कि किस तरह उन्होंने लोकतंत्र की रक्षा की और संत्रास का खात्मा किया! किस तरह हमारी पार्टी के ही 152 नेता-कार्यकर्ताओं का खून किया। कॉमरेड प्रबोध पुरकैत सहित 49 नेता-कार्यकर्ताओं को झूठे मुकदमे में फंसा कर उम्रकैद की सजा करवाई। चुनावों में उन्होंने व्यापक पैमाने पर संत्रास किया, धांधली की, नामांकन पत्र जमा नहीं करने दिये, व्यापक पैमाने पर नरसंहार किया, कितने सारे कुकर्म किये। फिर इस सीपीआई(एम) के संत्रास के खिलाफ लोकतंत्र की बहाली का वायदा करके तृणमूल सत्ता में आई। तृणमूल का राज भी आप प्रत्यक्ष देख रहे हैं। सीपीआई(एम) ने जहाँ लाकर छोड़ा था, तृणमूल ने वहीं से शुरू किया है। सीपीआई(एम) के रास्ते पर ही थाने और प्रशासन को पार्टी कन्ट्रोल में लाना, जिन्होंने थोड़ा 'निरपेक्ष' रहना चाहा उनका सजा के तौर पर तबादला कर देना, स्कूल-कॉलेज हर जगह पार्टी का दबदबा कायम कर देना, चुनाव के नाम पर सब जगह कब्जा कर लेना, सीपीआई(एम) के तैयार किये गये असामाजिक तत्वों के जरिये सर्वत्र व्यापक पैमाने पर संत्रास चलाना, खून, डकैती, लूटखसोट, अपहरण, बलात्कार, बेरोकटोक चलने देना, भ्रष्टाचार और जनता के धन को हड़पना आदि को बेरोकटोक चलने दिया जा रहा है।

राजनीति में यह चीज क्यों हो रही है? इसके लिए अवश्य ही ये पार्टियाँ जिम्मेदार हैं, इनके नेता भी जिम्मेदार हैं। इस मामले में कोई सवाल ही नहीं है। कई ईमानदार विवेकवान आदमी जिन्होंने अभी भी अपना जमीर बेचा नहीं है, सोचने-विचारने वाले हलके यह सब देख कर काफी बेचैन हैं। वे सोच रहे हैं कि यह सब क्यों हो रहा है? कैसे इसे बंद किया जाये? जिन्होंने काफी उम्मीदें बांध कर वोट दिये थे, सत्ता में बैठने के बाद उनका बिल्कुल उल्टा चेहरा क्यों दिखाई दे रहा है? जितनी ही वोटों से पार्टियों की अदला-बदली कर रहे हैं, उतना ही संकट बढ़ता जा रहा है। लेकिन क्यों? इस सवाल का जवाब दे सकती है एकमात्र मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष की चिन्तनधारा।

संसदीय लोकतंत्र में आज लोकतंत्र आजादी निष्पक्ष व निर्बाध चुनाव कहने को कुछ नहीं

यहाँ मैं मार्क्सवाद की शिक्षा से कहना चाहता हूँ कि हमारा समाज वर्गविभाजित है। पूँजीपति-मजदूर, शोषक-शोषित में बंटा हुआ है। यह इसलिए नहीं है कि किसी ने ऐसा चाहा था, बल्कि इतिहास के नियम से ही ऐसा हुआ है। इस वर्गविभाजित समाज में राजनीति भी दो तरह की है। एक राजनीति है पूँजीपतियों के स्वार्थ से संचालित, पूँजीवाद की रक्षा करने की राजनीति, पूँजीवाद जिससे बेरोकटोक शोषण-लूट चला सके उसकी राजनीति। जबकि एक है मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष की चिन्तनधारा में मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी राजनीति। झण्डा जिस भी रंग का हो, फेस्टून पर पार्टी का नाम जो भी हो, नारा चाहे जो भी हो -कांग्रेस हो, बीजेपी हो, तृणमूल हो, सीपीआई(एम) हो, ये सभी गद्दी दखल करने की बुर्जुआ राजनीति ही कर रही हैं। सीपीआई(एम) पेटी बुर्जुआ पार्टी होने पर भी इसी राजनीति की पथिक है। इन पार्टियों के नारों में चाहे जो भी फर्क क्यों न रहे, राजनैतिक लक्ष्य, कार्यपद्धति, आचरण-व्यवहार, संस्कृति वही है, हाथ में झण्डा न हो तो समझा ही नहीं जा सकता कि कौन किस पार्टी का है। आज पूँजीवाद के प्रतिक्रियावादी युग में बुर्जुआ राजनीति का जो हश्र होने की बात है, इन सभी पार्टियों का चरित्र वैसा ही हो गया है। जिस तरह बुर्जुआ वर्ग अर्थात् मालिकों का एकमात्र उद्देश्य है मुनाफा कमाना, सर्वोच्च मुनाफा कमाना, छंटनी करना, मजदूरी घटाना-लोग भूखे मरें, बिना इलाज मरें, चाहे जो भी हो-लाभ कमाना ही होगा। यह जो व्यक्तिकेन्द्रित मुनाफे के स्वार्थ पर आधारित पूँजीवाद है, यह जो अर्थव्यवस्था है, उसी के आधार पर पूँजीवादी राजनैतिक व्यवस्था है। मुनाफे के सवाल पर पूँजीपतियों का मकसद जिस तरह कैसे भी हो सबसे अधिक मुनाफा कमाना है, उसी तरह पूँजीवाद की रक्षक पाटियाँ का भी येन-केन-प्रकारेण सत्ता दखल करना है। इसमें लोकतंत्र, लोकतांत्रिक मूल्यबोध, शान्तिपूर्ण निर्बाध चुनाव, इन सबका कोई मोल नहीं है। मानवता, इन्सानियत, नैतिकता, मनुष्य का जीवन-मरण किसी का कोई मोल नहीं है। पंचायत, नगरनिगम, नगरपालिका, विधानसभा, लोकसभा सर्वत्र जैसे भी हो येन-केन- प्रकारेण सत्ता पर काबिज होना है। चाहे खून करके हो, खून बहा कर हो, मारपीट-दंगा करवा कर हो या दूसरा कोई नापाक हथकण्डा अपना कर हो, सत्ता चाहिए।

बुर्जुआ संसदीय लोकतंत्र ने ही दो विश्वयुद्ध करवाये और आज भी देश-देश में नरसंहार करवा रहा है और तबाही मचा रहा है

यह सब देख कर, केवल दु:ख प्रकट कर, हाय-तौबा मचा कर दिन काटने से काम नहीं चलेगा। जब तक पूँजीवाद रहेगा, तब तक यह संकट न केवल बरकरार रहेगा, बल्कि बढ़ता ही रहेगा। सत्ता दखल करने की लड़ाई में बारम्बार ये हत्याकाण्ड होंगे, खून की नदियाँ बहती ही रहेंगी। आप पश्चिमी पूँजीवादी देशों की ओर नजर पसार कर देखिये। वहाँ से ही इस देश में पार्लियामेण्टरी डेमोक्रेसी, संसदीय लोकतंत्र आया था। वही इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका जो लोकतांत्रिक पूँजीवादी देश हैं, जिन्होंने एक समय बुर्जुआ लोकतांत्रिक क्रान्ति संगठित की थी, व्यक्ति स्वतंत्रता के मंत्र का उच्चारण किया था, समता, मैत्री और स्वाधीनता की अपील की थी, जनवादी अधिकारों का ऐलान किया था, वे ही आज कितनी सोचनीय स्थिति हैं। कविगुरु रवीन्द्रनाथ ने अपनी 80वीं जन्म वर्षगांठ पर हुई सभा में गहरा दु:ख प्रकट करते हुए कहा था, मेरे शुरूआती जीवन में, किशोरावस्था में यूरोप की ओर देख कर मैं मुग्ध हो गया था, यूरोपीय सभ्यता से काफी आशा की थी। आज जीवन के आखरी दौर में आकर देखता हूँ कि वही यूरोप साम्राज्यवादी, युद्धखोर, मानव सभ्यता के लिए खतरनाक हो गया है। रवीन्द्रनाथ के इस कथन के बाद तो और कई साल गुजर गये हैं। हालांकि रवीन्द्रनाथ से बहुत पहले ही 1916 में महान लेनिन ने यूरोप-अमेरिका के साम्राज्यवादी चरित्र को उजागर कर दिया था। ये सब देश जिन्होंने एक दिन स्वाधीनता की आवाज बुलन्द की थी, उन्होंने ही तो संसदीय लोकतंत्र का झण्डा बुलन्द कर एशियाई-अफ्रीकी, लैटिन अमेरिकी देशों पर कब्जा करके उनको लूटा है। इन सब देशों के आजादी आन्दोलनों को बेरहमी से कुचला था। प्रथम विश्वयुद्ध की आग इन्होंने ही लगाई थी। द्वितीय विश्वयुद्ध की आग भी इन्होंने ही लगाई थी। इस संसदीय लोकतंत्र ने ही फासीवाद को पैदा किया था। इस संसदीय लोकतंत्र के अन्यतम पूजारी संयुक्त राज्य अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा, नागासाकी पर एटम बम गिरा कर लाखों लाख लोगों की हत्या की थी। वियतनाम के मुक्तिसंघर्ष को कुचलने के लिए वियतनाम को लगभग राख के ढेर में तब्दील कर दिया था। यही कुछ साल पहले, 'इराक के पास नरसंहारक हथियार हैं' यह झूठा बहाना बना कर इराक पर हमला करके लाखों लाख लोगों को मौत के घाट उतार

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 3 का शेष)

दिया था। आज वह इराक खण्डहर बना दिया गया है। इराक में रोजाना 10, 20, 50, लोगों का कत्ल हो रहा है। यह है संसदीय लोकतंत्र का आज का चेहरा। इन सब देशों में 'निर्बाध और शान्तिपूर्ण' चुनाव का मायने है निर्बाध और शान्तिपूर्ण कारपोरेट सैक्टर ही तय कर देता है कि इस बार कौन सी पार्टी गद्दी पर बैठेगी। धन बल, बाहु बल, मीडिया बल और ब्यूरोक्रेसी बल ही चुनावी नतीजे तय कर देता है। कहने को है बहुदलीय लोकतंत्र, वास्तव में है 'दो-दलीय लोकतंत्र', दो पार्टियों की अदलाबदली।

संसदीय लोकतंत्र

व्यक्ति-स्वाधीनता की दर्दनाक परिणति

मैं यहाँ आपके सामने एक घटना का जिक्र करना चाहता हूँ। इंग्लैण्ड के गार्जियन अखबार में हाल ही में एक लेख छपा था। अमेरिका के जासूसी विभाग के एक कर्मचारी ब्रैडली मैनिंग का कोर्ट मार्शल किया गया है। उनके खिलाफ गोपनीय तथ्यों का भण्डाफोड़ करने का आरोप था। उसे 136 साल की कारावास की सजा होगी। उन्होंने क्या किया था? उन्होंने सेना के जासूसी विभाग में काम करते समय एक विडियो देखा था। कोर्ट में अभियुक्त होने पर कहा, ''मैंने जो विडियो पिक्चर देखी है, उसमें देखा कि इराक में काफी सारे निरीह लोगों की निष्ठुर ढंग से हत्या कर रहे हैं अमेरिकी सैनिक। वे हत्या करके मौज-मस्ती कर रहे हैं। खुशी मना रहे हैं। वे आनन्दित हैं।'' कह रहे हैं, ''यह हमारे लिए अत्यंत आतंकजनक है। ये डिह्युमैनाइज्ड हैं। इनमें मानवीय बोध नाम की कोई चीज नहीं है। इन्सानियत नाम की कोई चीज नहीं है। जिन्हें मारा है उन्हें कह रहे हैं बास्टर्ड, डेड बास्टर्ड। और यह काम करने के लिए एक दूसरे को बधाई दे रहे हैं।'' यह है अमेरिकी राष्ट्र की फौज का चेहरा। साम्राज्यवादी राज्य उन्हें डिह्युमैनाइज्ड कर रहा है, ऐसा किये बिना उनसे अमानवीय निर्मम युद्ध चलवाया नहीं जा सकता। उसके बाद कह रहे हैं, ''मैंने इन तथ्यों का राज खोल दिया है इस विश्वास से कि इन्हें अगर उजागर कर दिया जाए तो अमेरिका देश की जनता जागेगी। उसमें हमारी विदेश नीति को लेकर और उस नीति को अपना कर किस तरह इराक, अफगानिस्तान में इस्तेमाल की जा रही है इसको लेकर चर्चा-बहस छिड़ेगी, जनता सचेत होगी। आलोचना की आंधी उठेगी।'' इस अपराध में उसे 136 साल के कारावास की सजा होगी। और जिसके माध्यम से उसने ये तथ्य दुनिया के सामने पहुँचा दिये हैं, वह है विकीलिक्स का जूलियन असांजे, आस्ट्रेलियाई नागरिक। उनका नाम अब कई लोग जानते हैं। उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका के कई काले कारनामों के गोपनीय दस्तावेजों का दुनिया के सामने भण्डाफोड़ दिया है। वह आज जनता के सामने और आ नहीं पा रहा है। वह अगर अमेरिकी शासकों के हाथ लग जायेगा तो वे उसका खून करवा देंगे। वह इक्वाडोर के लन्दन दूतावास में आत्मगोपन करने को मजबूर हो गये हैं।

एक और हकीकत आपके सामने पेश करता हूँ। वह भी आप जानते हैं। एडवर्ड स्नोडेन नामक एक अमेरिकी नागरिक है। संयुक्त राज्य अमेरिका की नेशनल सिक्युरिटी एजेन्सी ने दुनिया भर में 150 जगह 700 सर्वर लगाये हुए हैं। इनके जरिये इन्टरनेट, ई-मेल, वेबसाइट और फोन पर कौन किसके साथ क्या बात कर रहा है सब कुछ जान लिया जाता है। स्नोडेन ने इस गोपनीय तथ्य का भण्डाफोड़ कर दिया है। यह है बुर्जुआ दुनिया की बहुप्रचारित 'व्यक्ति-स्वाधीनता' का मौजूदा चेहरा। अमेरिका ने स्नोडेन के खिलाफ हुलिया सहित इस्तिहारी मुजरिम का नोटिस जारी कर दिया है। वे भी रूस के एक एयरपोर्ट में बंदीजीवन यापन कर रहे हैं। अमेरिका के ब्रैडली मैनिंग, एडवर्ड स्नोडेन और आस्ट्रेलिया के जूलियन असांजे–इन सब ने अमेरिका के भयावह हमलावर और नृशंस रूप, लोकतंत्र-विरोधी कार्यकलाप का भण्डाफोड़ कर दिया है, नतीजतन शासकों के विचार से इनको आजादी से जिन्दा रहने का कोई अधिकार नहीं है। एक को कारावास की सजा दी गई है। अन्य दो को देश से बाहर शरण लेने को मजबूर होना पड़ा है। गार्जियन पत्रिका में पत्रकार ने टिप्पणी की है कि जो सच्चाई को जान गया उसे आजादी नहीं है, लेकिन जिन्होंने इन सब युद्धों की योजना बनायी है, भयावह युद्ध अपराध किये हैं, गैरकानूनी जासूसी की है, वे फिर भी आजादी से घूम रहे हैं। यह है बुर्जुआ स्वाधीनता। यह है बुर्जुआ लोकतंत्र का रूप। यह है एक जमाने के लोकतंत्र के पूजारी अब्राहम लिंकन, जेफरसन के देश का आज का हाल। हर पल लोकतंत्र, मानवता, व्यक्ति-स्वाधीनता को पैरों तले रौंदा जा रहा है।

यह संसदीय लोकतंत्र ही तो हमारे देश में चल रहा है। हमारे देश की ये पार्टियाँ इस संसदीय लोकतंत्र, बुर्जुआ लोकतंत्र का झण्डा वहन कर रही हैं। इसी वजह से इस तरह का खूनखराबा चलेगा, संत्रास चलेगा, और भी बढ़ेगा, रक्तपात होगा, लोकतांत्रिक चुनाव के नाम पर धांधली, बूथ कैपचरिंग, ये सब बढ़ते ही रहेंगे। ऐसा होने पर इससे क्या कोई मुक्ति नहीं मिलेगी? एक रास्ता है। वह है एकमात्र पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति के जरिये बुर्जुआ राज्य और बुर्जुआ वर्ग शासन का खात्मा करना। इस देश की जनता को तय करना होगा कि क्या वे पूँजीवाद को बरकरार रखेंगे? इस सड़े-गले, वीभत्स, कुत्सित, संसदीय लोकतंत्र की लाश को ढोते रहेंगे? यह करते रहे तो यह संत्रास और गंदगी और भी देखनी पड़ेगी। ये दिनोंदिन और भी बढ़ती रहेंगी। अगर यह नहीं चाहते हैं तो पूँजीवादी व्यवस्था की लाश को कब्र में दफनाना पड़ेगा, नई सामाजिक व्यवस्था समाजवाद कायम करना होगा। इन दोनों में से एक रास्ता चुनना होगा।

खतरा क्या केवल इस जगह ही है? यह पूँजीवादी व्यवस्था नकली वामपंथी सीपीआई(एम) और कांग्रेस, तृणमूल, बीजेपी की राजनीति, इनकी संस्कृति ने देश को आज कहाँ ला पटका है? आप एक बार नजर पसार कर देखिये। कल ही तो काटोयात में दो बहनों की रक्षा करते हुए एक भाई को जान गवांनी पड़ी। ये प्रतिदिन की घटना है। ऐसी एक परिस्थिति है कि माँ-बाप लड़कियों के सड़क पर बाहर जाने से डरते हैं। स्कूल-कॉलेज से समय पर सही सलामत वापस आ जाएगी कि नहीं? ऐसे हालात हैं। पत्नी के आफिस से लौटने में देर करने से पति बैचेन हो जाता है कि कहीं कोई मुसीबत में तो नहीं पड़ गई? ये कौन सा देश है? इस देश में ही तो राममोहन, विद्यासागर, बंकिम चन्द्र, रवीन्द्रनाथ, शरतचन्द्र, नजरुल, देशबंधु, विपिन चन्द्र पाल, सुभाषचन्द्र बोस आदि पैदा हुए थे। इस देश में ही तो फूले, तिलक, लाला लाजपत राय, प्रेमचन्द, सुब्रह्मण्यम भारती, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि पैदा हुए थे। क्या इनका आज लेशमात्र भी कोई नामोनिशान है? आज के जो युवक तरह-तरह के अनैतिक जघन्य काम कर रहे हैं, वे तो पैदाइसी वह चरित्र या स्वभाव लेकर पैदा नहीं हुए। तब कौन सा माहौल उनको इस रास्ते पर धकेल रहा है? क्यों ऐसा हो रहा है? यहाँ-वहाँ शराब के ठेके खुले हुए हैं। शराब पीना तो अब कई छात्र-नौजवानों के लिए एक गिलास पानी पाने जैसा हो गया है। भद्रता शोभनता नारी मर्यादा ये सब मानवीय मूल्यबोध आज धूल में मिले हुए हैं। इस युवाशक्ति का सृजन किसने किया? यथार्थ यौवन की हत्या किसने की? उसके लिए भी तो यह पूँजीवादी व्यवस्था ही जिम्मेदार है। इस बारे में कॉमरेड शिवदास घोष ने 1974 में कहा था, ''दिन पर दिन खाली पेट, अधनंगे-अधभूखे रहते हुए भी, शोषण-जुल्म से जर्जरित होते हुए भी कोई राष्ट्र उठ खड़ा हो सकता है, लड़ सकता है, लड़ने का मादा हासिल कर सकता है, एकजुट हो सकता है, सिर ऊंचा करके खड़ा हो सकता है अगर उस राष्ट्र का नैतिक बल अटूट हो और जनता के सामने एक सही आदर्श हो।... भारत का शासक समुदाय राष्ट्र के उस नैतिक चरित्र को पूरी तरह तोड़ डालने की साजिश में लिप्त है। वे अत्यंत धुरंधर हैं। वे जानते हैं कि देश की जनता सिर्फ पुलिस मिलट्री की मदद से ज्यादा दिन दबा कर नहीं रखी जा सकती। पुलिस शासन और मिलट्री की ताकत से आखिरकार जनशक्ति को दबाया नहीं जा सकेगा। सत्ता को बचाये नहीं रखा जा सकेगा। जनशक्ति सिर ऊंचा करके उठ खड़ी होती है अगर उसे सही क्रान्तिकारी आदर्श का पता लग जाये और उसका नैतिक बल अटूट रहे।...लोभ-लालच, नीचता, जो मनुष्य को अमानव बना देती है, उसकी वीरता और यथार्थ मर्यादाबोध को नष्ट कर देती है, उसे आज प्रश्रय दिया जा रहा है। रुपये के बदले में चुनाव का काम करवाया जा रहा है। यही सब चल रहा है आज व्यवहारिक राजनीति की दुहाई देकर। लाखों लाख बेरोजगारों से आज सारा देश भर गया है। लोगों का गुजारा नहीं हो रहा है, इसी का फायदा उठा कर ये राजनैतिक पार्टियाँ उनका इस्तेमाल कर रही हैं, इस तरह ये उन्हे रोजगार दे रही हैं।''

कलुषित परिवेश में केवल सदिच्छा से अभिभावक सन्तान को बचा नहीं पायेंगे।

1974 में दिया गया कॉमरेड शिवदास घोष का यह भाषण है। आज देश की ओर नजर डाल कर देखिये, यह चेतावनी अक्षरश: मिल रही है कि नहीं! इन सब पार्टियों के कार्यकर्ता के तौर पर जो लोग जाने जाते हैं, उनका चेहरा क्या है? ब्रिटिश राज के जमाने में स्वदेशी कहने की जो बात थी, स्वदेश के लिए जो अपनी जान की बाजी लगा कर लड़ रहे थे, उन्हें कहा जाता था स्वदेशी। इन स्वदेशियों की बात सुनने से गाँव-शहर-मोहल्ले में भीड़ जमा हो जाती थी, लोग मानो किसी साधू-सन्यासी को देख रहे हों। हमने अनपढ़ माताओं को देखा, स्वदेशी कहते ही उनकी आँखें श्रद्धा से झुक जाती थी। तब स्वदेशी थे खुदीराम बोस, विनय-बादल-दिनेश, मास्टरदा सूर्य सेन की वाहिनी, प्रीतिलता, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अश्फाक उल्ला खान। जिनके प्रति देख कर शरतबाबू ने एकदिन कहा था, 'देशसेवा केवल बातों की बात नहीं है, मानव जीवन की श्रेष्ठ साधना है। एक तरफ देश, और दूसरी तरफ देशसेवक, बीच में और कुछ नहीं। नाम यश की आकांक्षा नहीं। धनप्राप्ति नहीं। देश के लिए जो अपने प्राण न्योछावर कर सकता है उसी को तो देशसेवक कहते हैं।' यह थी उन दिनों की राजनीति। ब्रिटिश राज के अत्याचार फांसी लाठी-गोली की, घर-बार की, किसी की परवाह न करते हुए ही बंगाल का यौवन सीना तान कर उठ खड़ा हुआ था, उसी बंगाल ने भारत को जगाया था। उस विप्लववाद के मूर्तिमान प्रतिनिधि थे नेताजी सुभाषचन्द्र। जबकि आज बंगाल का चेहरा क्या है? आज के युवकों का एक बहुत बड़ा हिस्सा शराब-जुए-सट्टे-नशीले पदार्थों की लत में डुबा हुआ है, हफ्ता वसूली-डकैती-लूटखसोट में लिप्त है, नारीदेह को लेकर कुत्सित चर्चा, इवटीजिंग, छेड़छाड़ और मर्डर में लगा हुआ है, दूसरा हिस्सा डिग्री हासिल करने, कॅरियर बनाने में व्यस्त है। इनका सृजन किसने किया? इस पूँजीवादी व्यवस्था ने। इनके जमीर और इन्सानियत को न मारे तो पूँजीपतियों को खतरा है। वोट-बटारू ये पार्टियाँ इन युवकों को उल्टे रास्ते पर धकेल रही हैं, रुपयों के बदले में इनका अपने गद्दीस्वार्थ में इस्तेमाल कर रही हैं। जहाँ परिवेश इतना कलुषित और विषाक्त हो, वहाँ किसी शिक्षक या अभिभावक की चाहे जितनी भी सदिच्छा हो, इसके चंगुल से सन्तान को बचाना कठिन है। इन युवकों को बचाना है तो पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्तिकारी आन्दोलन, क्रान्तिकारी राजनीति और संस्कृति चाहिए।

सीपीआई(एम) के लाखों सदस्य कहाँ खो गये

उन सब पार्टियों के हजारों हजार कार्यकर्ता, लाखों लाख कार्यकर्ता हैं। सीपीआई(एम) के राज्य सचिव ने हाल ही बताया है कि उनकी पार्टी की सदस्य संख्या चार लाख तीस हजार है। मार्क्सवादी होने का दावा करती है यह पार्टी, वामपंथी होने का दावा करती है यह पार्टी, फिर तृणमूल की धमकी के आगे कहाँ चले गये उनके ये चार लाख तीस हजार कार्यकर्ता? दुबक गये। ये सब हैं ऐसे क्रान्तिकारी। ऐसे साहसी। सरकारी खेमे में रहने पर ये बड़े क्रान्तिकारी बनते हैं। जैसे 34 साल खूब 'क्रान्ति' की है, जब थाना पुलिस मुट्ठी में थी, एन्टी-सोशल हाथ में थे। अब थाना-पुलिस तृणमूल के कन्ट्रोल में है, एन्टी-सोशल तृणमूल के कन्ट्रोल में हैं। नतीजतन ये शूरमा बिलों में चले गये हैं। फिर यह तृणमूल भी सीपीआई(एम) के शासन में संत्रास संत्रास का शोर मचाया करती थी। सिर ऊंचा करने की हिम्मत नहीं कर पाती थी। आज वे वीर बने हुए हैं। पुलिस उनके हाथ में है। और सीपीआई(एम) के ट्रेनिंग प्राप्त असामाजिक तत्वों को अब तृणमूल कन्ट्रोल कर रही है। यह है राजनीति। इनकी राजनीति की प्रमुख ताकत ही हैं असामाजिक तत्व। याद रखें, नीति-आदर्श-संस्कृति के ऊंचे स्तर की बुनियाद पर दीक्षित कोई भी कार्यकर्ता इन सब पार्टियों में नहीं है। रह ही नहीं सकता। ये पैसों के बदले में काम करते हैं, लाइसेन्स, कोटा, परमिट, प्रमोटरी के ऐवज में काम करते हैं। ये चाहते हैं बेरोकटोक हफ्ता वसूली, लूटखसोट, डाकेजनी का मौका। ये चाहते हैं लड़कियों का अपहरण करें, महिलाओं से दुराचार करें, बेरोकटोक बलात्कार करें। पुलिस उनके बदन को हाथ न लगा सके। यह वाहिनी ही इन पार्टियों की चुनावी ताकत है। नतीजतन एक तरफ पूँजीवाद इन्सानियत की हत्या कर रहा है, उसका खून कर रहा है। यह तो एक पहलू है। दूसरी तरफ ये सब पार्टियाँ भी इन्सानियत को खत्म कर रही हैं। इसीलिए शराब की इतनी नदियाँ बहाई जा रही हैं। आजादी आन्दोलन शुरू हुआ था मादक द्रव्यों का बहिष्कार करते हुए। जो शराब-विरोधी पिकेटिंग करते थे उन्हें मार खानी पड़ती थी। जबकि सीपीआई(एम) के शासनकाल में धड़ल्ले से शराब की दुकानें खोलने दी गई, हमने प्रतिवाद किया था। तृणमूल आने के बाद और भी बढ़ा दी गई, सरकारी आमदनी बढ़ाने के बहाने। शराब पीयें मदहोश हो जाओ, **इतराओ**। सब कुछ करो, सिर्फ पार्टी का झण्डा उठाये रहो। इसलिए इन पार्टियों की ताकत जितनी बढ़ रही है उतने ही बलात्कार बढ़ रहे हैं, अपहरण बढ़ रहे हैं, छेड़छाड़ बढ़ रही है, उतनी ही डकैती, चोरी, लूटपाट, फिरोती या हफ्ता वसूली सब कुछ बढ़ रही है। यही है हकीकत। इसलिए यहाँ भी हमारा सवाल है कि

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 4 का शेष)

अगर नारी को हमले से बचाना चाहते हो तो केवल कानून पास करने से काम नहीं चलेगा, केवल पुलिसिया शासन से बात नहीं बनेगी, हालांकि पुलिसिया शासन कहने को कुछ नहीं होता है। क्योंकि जो पुलिस को नियंत्रण करते हैं उनकी पनाह में ही तो ये सब असामाजिक तत्व रहते हैं। इसके लिए चाहिए उन्नत रुचि-संस्कृति के आधार पर पूँजीवाद-विरोधी क्रान्तिकारी आन्दोलन। जिस आन्दोलन का आह्वान कॉमरेड शिवदास घोष कर गये हैं। इसके सिवा हमारे लिए इस संकट से बचने का दूसरा और कोई उपाय नहीं है।

एक हफ्ते में 15 लाख मजदूरों की छंटनी हुई है

आर्थिक क्षेत्र में भी संकट भयंकर है। यह सब आप भलीभान्ति जानते हैं क्योंकि आप खुद इसके भुक्तभोगी हैं। दिन पर दिन किस तरह जरूरत की चीजों के दाम बढ़ रहे हैं। करोड़ों लोग बेरोजगार हैं। गाँव लगभग खाली हो गये हैं। गाँव के गरीब लोग माइग्रेण्ट लेबर के तौर पर इस राज्य से उस राज्य, इस शहर से उस शहर, यहाँ तक कि विदेश में जा रहे हैं। ग्रामीण जीवन टूटता जा रहा है। यह है हालत। कल-कारखाने बंद हैं, भारत में औद्योगिक उत्पादन तली में जा पहुँचा है। गिरते-गिरते 1.8 प्रतिशत पर आ गया है। कोर इण्डस्ट्री कहने से जो समझा जाता है, मूल उद्योग हैं वे, उनके विकास की दर 1 प्रतिशत से भी नीचे आ गई है–सिर्फ 0.3 प्रतिशत। यह सरकारी आंकड़ा है। यूरोप कह रहा है वहाँ मंदी है। भारत के शासक मंदी नहीं कहते, मंदी शब्द सुनने में खराब लगता है। ये कहते हैं अर्थव्यवस्था की रफ्तार मंदी है। ये इन नये-नये शब्दों की आड़ में मूल सच को छिपाना चाहते हैं। आपको एक और आंकड़ा बताता हूँ। इसे भी आपको जानने की जरूरत है। पिछले एक हफ्ते में 15 लाख मजदूरों की छंटनी हो गई है। लोहा-खान उद्योग से 10 लाख और स्वर्ण उद्योग से 5 लाख। ऐसे में सोच-विचार करके देखिये जब एक हफ्ते में ही यह हालत है तो फिर हर महीने और हर साल कितने मजदूरों की छंटनी हो रही है। हमारे देश का बजट घाटा है 5 लाख 20 हजार 925 करोड़ रुपये। इस हालत में पिछले साल सरकार ने इस देश के कारखानेदारों का कर्ज माफ करने और कर्ज का बोझ कम करने के लिए 5 लाख 70 हजार करोड़ रुपये आर्थिक सहायता दी है। ऐसे में अब मिला कर देखिये केन्द्रीय बजट घाटा 5 लाख 20 हजार 925 करोड़ रुपये, लेकिन सरकार ने पूँजीपतियों को दिये हैं 5 लाख 70 हजार करोड़ रुपये। इस के बाद सरकार कह रही है कि पैसा नहीं है, शिक्षा को प्राइवेट कारोबारियों के हाथों में दे दिया है, स्वास्थ्य को प्राइवेट कारोबारियों के हाथों में दे दिया है। खाद्य, ईन्धन तेल, खाद से 1 लाख 64 हजार 824 करोड़ रुपये सब्सिडी में कटौती कर दी गई है। लेकिन सामरिक मद् में बजट आबंटन किया गया है 2 लाख 3 हजार 632 करोड़ रुपये। दूसरी तरफ चालू वित्त वर्ष में सरकार ने अन्दरूनी कर्ज लिया है 5 लाख 69 हजार करोड़ रुपये। अगले साल 6 लाख करोड़ रुपये और लेगी। विदेशी कर्ज की मात्रा 24 लाख करोड़ रुपये है। कौन चुकायेगा? जनता को ही सूद समेत मूल भी चुकाना पड़ेगा। इसलिए पेट्रोल-डीजल-रसोई गैस के दाम और भी बढ़ेंगे।

एक और आंकड़ा सुन कर तो आप हैरान हो जाएंगे। यह पता लगा है कि काले धन का एक मामूली सा हिस्सा, 75 लाख करोड़ रुपये विदेश में है। इसकी मात्रा आप सोच कर देखिये कितनी है! भारत से उद्योगपतियों, राजनैतिक नेताओं, अफसरशाहों ने विदेश में यह धन जमा कर रखा है। यह है देश का हाल। यह है विकास की तसवीर। एक तरफ महल जैसे घर में अम्बानी टाटा बिड़ला जिन्दल गोयनका की औलाद पैदा हो रही है, दूसरी तरफ बस्ती की टूटी झोंपड़ी में या फूटपाथ पर गरीब की सन्तान पैदा हो रही है। अमीर फाइव स्टार होटल में नाश्ता करते हैं, उधर लाखों लाख लोग भूखों मर रहे हैं, बिना इलाज के मर रहे हैं। कर्ज के बोझ तले दब कर आत्महत्या कर रहे हैं। यह है देश का विकास! दुनिया में हर जगह ही पूँजीवादी व्यवस्था का यही हाल है। विकसित साम्राज्यवादी देश तो सर्वग्रासी मंदी के समन्दर में गोता खा रहे हैं, जिस किसी भी तिनके का सहारा लेकर बचने की कोशिश कर रहे हैं। पूँजीवादी बाजार व्यवस्था कायम रख कर इससे निजात नहीं मिल सकती है। इसलिए हर जगह चाहिए पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति।

बीजेपी है नकली हिन्दूवादी, जबकि कांग्रेस है नकली सेक्युलर

कुछ दिन बाद ही एक और लड़ाई आ रही है – संसद के चुनाव। एक तरफ नकली हिन्दूवादी बीजेपी है और दूसरी तरफ नकली सेक्युलर कांग्रेस। दोनों पक्ष लाव-लश्कर, तलवार-बन्दूक लेकर तैयार हैं। कीचड़ उछालना शुरू हो गया है। और भी देखिये, यह जो तेलंगाना की आग लगाई गई है, वह तो वोटों का हिसाब लगा कर ही लगाई गई है। जिस आग में दार्जिलिंग जल रहा है, असाम जल रहा है, उत्तर प्रदेश जल रहा है, सभी के पीछे वोटों का गणित काम कर रहा है। ज्यादा एमपी सीट पाने के उद्देश्य से वोटों के सौदागर देश के टुकड़े-टुकड़े कर रहे हैं, और भी खण्डित कर रहे हैं।

फिर से राममन्दिर का नारा उठाया जा रहा है। मैंने नकली हिन्दूवादी क्यों कहा? हम मार्क्सवादी हैं, हम निरीश्वरवादी हैं, धर्म के बारे में हमारी धारणा बिल्कुल अलग है। लेकिन बीजेपी का हिन्दुत्ववाद देखने से कहा जा सकता है कि चेतन्य असली हिन्दू नहीं थे, रामकृष्ण हिन्दू नहीं थे, विवेकानन्द हिन्दू नहीं थे। इनके जीते जी बाबरी मस्जिद थी, इन में से किसी ने नहीं कहा कि मस्जिद तोड़ो, राम मन्दिर बनाओ। रामकृष्ण खुद दक्षिणेश्वर में मन्दिर के पास ही मस्जिद में नमाज पढ़ते थे। वे क्या हिन्दू नहीं थे? 24 अप्रैल को मैदान में मैंने विवेकानन्द का वक्तव्य पढ़ कर सुनाया था। धिक्कार जताया था, मन्दिर बनाने को लेकर जो मारकाट कर रहे हैं, उनको कहा है, तुम मन्दिर बना रहे हो, फूट डाल रहे हो, और असली भगवान गरीब लोग रास्ते में भूखे मर रहे हैं। कह रहे हैं कि कृष्ण कांशी या मथुरा में पैदा हुए यह जानने की क्या जरूरत है, जरूरत है गीता के सन्देश को समझने की। विवेकानन्द क्या हिन्दू नहीं थे? आरएसएस के मुखिया मोहन भागवत ने क्या कहा था? जब दिल्ली में 'निर्भया' ('दामिनी') के बलात्कार और हत्या के विरोध में पूरे देश के लोगों की आँखों से आँसू बह रहे थे, पूरे देश में प्रतिवाद की आग धधक रही थी, तब मोहन भागवत ने कहा था शहर की लड़कियों को लक्ष्मण रेखा लांघ कर घर से बाहर निकल रही हैं, इसीलिए यह सब तो होगा ही। जैसे गाँवों में बलात्कार होता ही नहीं हो, अत्याचार होता ही नहीं हो। गत दिनों कोटायात की घटना कहाँ घटी, शहर में या गाँव में? हिन्दूवादी आरएसएस उपदेश दे रही है कि लड़कियाँ घर से बाहर न निकलें। विवेकानन्द जिन्दा होते तो क्या यह बात कहते? या वे यह कहते कि मन्दिर को ताला लगाओ, इन सब हिन्दूवादियों के खिलाफ तलवार उठाओ। इस बाबरी मस्जिद को दिलो जान से रक्षा करते। इसीलिए कह रहा हूँ कि ये नकली हिन्दूवादी हैं। हिन्दुत्व का शोर वोटों के लिए उठा रहे हैं।

कांग्रेस भी सेक्युलर नहीं है। सेक्युलर कौन होता है? सेक्युलरिज्म की बात यूरोप से आई थी, बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति के युग में। सेक्युलर ह्युमेनिज्म का यथार्थ बंगाली शब्द है पार्थिव मानवतावाद। अर्थात् सुपर नेचुरल पावर या अतिप्राकृतिक किसी सत्ता को न मानना। राजतंत्र में चलता था ईश्वर का शासन। ईश्वर का दूत होता था राजा। ईश्वर का सन्देश लेकर राजा चलता था। इसके खिलाफ लड़ाई यूरोप में नवजागरण लायी। बेकन, स्पिनोजा, ह्युम, कांट, फ्यूरेरबाख, दिदरो सहित कई दार्शनिकों ने ईश्वरीय चिन्तन पर चोट की। इसी समय आया था सेक्युलर ह्युमेनिज्म का आह्वान। अर्थात् राजनीति शिक्षा समाज को धर्म से मुक्त करना होगा।

हमारे देश में कौन थे सेक्युलर ह्युमेनिस्ट

हमारे देश में सेक्युलर ह्युमेनिस्ट थे महान विद्यासागर। विद्यासागर ने जो कहा था वह सुनें तो आप शायद हैरान रह जाएंगे। उन्होंने कहा था, 'वेदान्त और सांख्य भ्रांत दर्शन हैं'। इनमें सत्य नहीं है। हमें मजबूर हो कर पढ़ाने पड़ते हैं। यूरोप से वैज्ञानिक दर्शन पढ़ाने की जरूरत है, वस्तुवादी दर्शन पढ़ाने की जरूरत है। ये पढ़ने से इस देश के लोग वेदान्त के चिन्तन से मुक्त होंगे। इस विद्यासागर को इस देश के कितने लोग जानते हैं? विद्यासागर ने बोधोदय लिखा था। उनकी पाठय पुस्तक में कहीं भी ईश्वर को लेकर चर्चा नहीं है। इसे लेकर आलोचना हुई। अंग्रेजों ने आयोग बिठाया। इस आयोग के प्रधान जॉन मार्डक ने रिपोर्ट में लिखा था कि विद्यासागर महज समाजसुधारक ही नहीं हैं, वे पक्के वस्तुवादी भी हैं। वे सेक्युलरिस्ट हैं। उन्होंने सेक्युरिज्म का प्रचार करने के लिए ही पुस्तक लिखी है। जैसे यूरोप में सेंट साइमन, रोबर्ट ओवन हैं, वैसे ही हैं विद्यासागर। वही था विद्यासागर का सेक्युलर ह्युमेनिज्म का आह्वान। सेक्युलर मानवतावादी थे शरतचन्द्र। उन्होंने कहा है, 'बड़े-बड़े ईश्वरविश्वासी भक्तों का दल ही इन सब देशों की पालिटिक्स में छाया हुआ है। जिन्हें होना चाहिए था सन्यासी, वे हो गये हैं पालिटिसियन। इसलिए भारत में पालिटिक्स की है यह दुर्दशा।' उन्होंने कहा है, 'सारे ही धर्म मिथ्या हैं, आदिम काल के कुसंस्कार हैं, विश्वमानवता के इतने बड़े दुश्मन और नहीं हैं।' कह रहे हैं, 'हमेशा सत्य को ग्रहण करें। उसमें अगर वेद झूठे साबित हो जायें तो हो जाएं, वेद सत्य से बड़े नहीं हैं। धर्मग्रंथ कभी अभ्रांत नहीं हो सकते। वेद भी धर्मग्रंथ हैं, इसलिए वेदों में भी झूठ की कमी नहीं है।' ये हैं शरतचन्द्र। ये थे सेक्युलर ह्युमेनिस्ट। इसके अलावा सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था, "धर्म को पूरी तरह से राजनीति से दूर कर देना चाहिए। धर्म व्यक्तिविशेष का व्यक्तिगत मामला होना चाहिए। व्यक्तिगत तौर पर आदमी जो भी धर्म पसन्द करे उसका अुसरण करने की पूरी आजादी हो। लेकिन धार्मिक, अथवा अतींन्द्रीय मामलों के द्वारा राजनीति संचालित नहीं होनी चाहिए। यह सिर्फ आर्थिक और वैज्ञानिक विचारबुद्धि से संचालित होनी चाहिए।" नजरूल ने भी यही बात कही थी। भगत सिंह ने भी तो लिखा था, 'मैं नास्तिक क्यों'। ये थे सेक्युलर ह्युमेनिस्ट। धार्मिक प्रभाव से मुक्त मानवतावाद की ही चर्चा इन्होंने की थी।

यहाँ मैं एक बात और कहना चाहता हूँ। कई लोगों का मानना है कि सुभाषचन्द्र वेदान्त में विश्वास किया करते थे। यह बात ठीक है कि वे शुरूआती जीवन में इसमें विश्वास किया करते थे। सुभाषचन्द्र विदेश जाने से पहले आप जानते हैं कि अपने घर में नजरबंद थे। नजरबंद होने से पहले वे जेल में थे। वहाँ वे आमरण अनशन पर बैठे थे। उन्होंने सोचा था कि जतीन दास की तरह शायद उनकी भी जान जायेगी। इसलिए उन्होंने अनशन शुरू करने से पहले दो वक्तव्य रखे थे। एक उनकी पार्टी के कार्यकर्ता के प्रति और एक भारत के छात्र-नौजवानों के प्रति। छात्र-नौजवानों से सुभाष ने क्या कहा था, वह मैं आपको सुनाना चाहता हूँ। देश छोड़ने से पहले उन्होंने छात्र-नौजवानों से अपना आखिरी आह्वान किया था, "परिदृश्यमान जगत के स्वरूप के सवाल पर, अब तक विज्ञान से जो मिला है, वह जानने के लिए हमें अपना मन खुला रखना चाहिए।" अर्थात् जिस दुनिया को देख रहा हूँ, इस दुनिया के बारे में अभी तक विज्ञान से जो कुछ पता लगा है उसके फलस्वरूप हमें मन खुला रखना चाहिए, अंधा मन नहीं रखना चाहिए। इसके बाद कहा है, "विज्ञान की आगे तरक्की के साथ-साथ और भी सत्य प्रकट होना लाजिमी है। इस दौरान हमें ध्यान रखना चाहिए कि वस्तुवाद के बारे में हमारी पहले की धारणा बिल्कुल अप्रचलित, पुरानी हो गई है। एक तरफ वैज्ञानिक अध्ययन, दूसरी तरफ दार्शनिक युक्ति-अनुमान, इन दोनों ने उस नजरिये को तार-तार कर दिया है।" अर्थात् वस्तुवाद के विरोध पर आधारित पहले की जो धारणा थी, वह वैज्ञानिक आविष्कार और युक्ति-तर्क द्वारा तार-तार हो रही है। इसलिए छात्र-नौजवान ताकि अंधविश्वासी न रहें विज्ञान को सत्यानुसंधान के पथ के तौर पर ग्रहण करें, यही आह्वान वे कर गये हैं। यही है यथार्थ सेक्युलर ह्युमेनिस्ट का वक्तव्य।

गाँधीजी के नेतृत्व में धर्म आधारित राजनीति का ही नतीजा है आज की साम्प्रदायिकता और जातपात का बोलबाला

कांग्रेस का सेक्युलरिज्म क्या है? गाँधीजी ईमानदार थे, लेकिन उन्होंने सेक्युलरिज्म नहीं अपनाया। उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण और क्रान्ति-विरोधी बुर्जुआ वर्ग चिन्तन से अनजाने में ही संचालित हो कर धर्म आधारित राजनीति, सर्वधर्म समन्वय का नारा देकर राष्ट्रीय एकता की बात की। इसके परिणामस्वरूप सर्वधर्म समन्वय की बात कह कर भी, वास्तव में कांग्रेस में हिन्दू धर्म की प्रधानता रह गई और वह भी उच्च वर्ण के हिन्दुओं की प्रधानता। इसके फलस्वरूप मुसलमान एक राष्ट्र गठन की प्रक्रिया में नहीं आ पाये। यहाँ तक कि तथाकथित 'निम्न जातियों' के हिन्दू भी राष्ट्रीय कांग्रेस के आन्दोलन में शामिल नहीं हुए। तथाकथित इसलिए कह रहा हूँ कि हम उन्हें निम्न जाति के नहीं मानते हैं। आज भारत में जो इतनी साम्प्रदायिकता, जातपात आप देख रहे हैं, वह सब गाँधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस की धर्म आधारित राजनीति का नतीजा है। इसलिए जब राजनीति में सन्यासियों के हावी होने की शरतचन्द्र ने बात की थी तो उनका अभिप्राय इन गाँधीजी से ही था। इस दुर्दशा ने बाद में कितना विकराल रूप ले लिया है, यह भी हम देख रहे हैं। गाँधीजी वाली ईमानदारी अब कांग्रेसी नेताओं में नहीं रही है। ये भ्रष्ट, अधोपतित और बेईमान हैं। ये भी सत्ता के लोभी हैं, बीजेपी भी ऐसी ही है, सभी पार्टियाँ ऐसी ही हैं।

बीजेपी के हाथ दंगों में खून से रंगे हैं। हिन्दू वोट पाने के लिए बीजेपी हिन्दू सेंटीमेंट को उठा रही है। कांग्रेस जानती है कि हिन्दू वोटों का एक हिस्सा उसे भी मिल जाएगा। कांग्रेस के मुँह में सेक्युलर बात है मुसलमानों के वोट पाने के लिए, इसके सिवा और कोई बात नहीं है। क्या कांग्रेस साम्प्रदायिक दंगे नहीं करवाती है? साठ के दशक में राउरकेला में दंगा, बिहार में भागलपूर का दंगा, इन्दिरा गाँधी की हत्या के बाद दिल्ली में सिखों का कत्लेआम–क्या ये सब कांग्रेस ने नहीं करवाये? अब वोटों से पहले वे मुसलमान हितैषी, उनके त्राता बनना चाहते हैं। उत्तर प्रदेश में कौन मुसलमानों का दोस्त है इसे लेकर कांग्रेस, मुलायम और मायावती की लड़ाई है। इसके बाद देखिये

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 5 का शेष)

सारे भारत भर में जातपात की राजनीति, बैकवर्ड कास्ट की राजनीति। पहले हिन्दू धर्म की चार वर्ण या जातियाँ होती थी। अब चार जातियों को तोड़ कर आठ, नौ, दस जातियाँ बना दी गई हैं। यह सब वोट बैंक की राजनीति है। घोर मौकापरस्ती है। अत: इस तरफ भी सोच कर देखिये। इस देश ने कांग्रेस का शासन देखा है। इस देश ने बीजेपी का शासन देखा है। ये देश को कहाँ ले जा रहे हैं? इस देश ने सीपीआई(एम) समर्थित संयुक्त गठबंधन (यूपीए) सरकार का शासन देखा है। देश का हाल आज क्या है? असल में इन सभी ने पूँजीवाद की गुलामी की है और कर रहे हैं।

सीपीआई(एम) के नीति-कार्यक्रम में ही है इस पार्टी के अधोपतन का कारण

अब कइयों के मन में सवाल है कि सीपीआई(एम) का हश्र यह क्यों हुआ? यह धारणा ठीक नहीं है कि सरकार थी इसलिए यह अधोपतन हो गया। दरअसल शुरूआत में ही गलती थी। देखिये, भारत के पूँजीपति एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका के देशों में 8 हजार करोड़ डालर निवेश कर रहे हैं। इन सब देशों में खान खरीद रहे हैं, जमीन खरीद रहे हैं, यूरोप-अमेरिका-आस्ट्रेलिया में इस्पात व दूसरे कारखाने खरीद रहे हैं। यहाँ तक कि ज्वाइंट वेन्चरों (संयुक्त उद्यमों) में 1 हजार 3 सौ करोड़ डालर पूँजीनिवेश कर रहे हैं। इसका मायने क्या है? इसका मायने है भारतीय पूँजीपति इन सब देशों की श्रमशक्ति और कच्चे माल का शोषण-दोहन कर रहे हैं। ये भी आज साम्राज्यवादी हो गये हैं। कुछ दिन पहले एक सवाल के जवाब में इस देश के पूँजीपतियों ने कहा कि हमने अमेरिका में एक लाख अमेरिकी मजदूरों को नौकरी दी है। मतलब भारत के पूँजीपति अमेरिका में कारखाने चलाते हैं, जिनमें 1 लाख अमेरिकी मजदूर काम करते हैं। यह है भारत के पूँजीपतियों का चेहरा। देश में वाणिज्यिक घाटा बड़ा भारी है, 5 लाख 28 हजार करोड़ रुपये। उद्योग नहीं लग रहे हैं, कारखाने बंद पड़े हैं, औद्योगिक उत्पादन घट रहा है, इस हालत में भारत के पूँजीपति विदेश में पूँजी निवेश कर रहे हैं। सभी देशों में पूँजी का स्वार्थ ही सार्वभौम है, देशहित और जनहित कहने को कुछ नहीं है। राज्य भी सार्वभौम पूँजी के स्वार्थ के अधीन है। आजादी भी है पूँजी के बेरोकटोक शोषण-लूट करने की आजादी। जनता है पूँजीवादी शोषणतंत्र का मानवदेही कच्चा माल मात्र। जहाँ भी मुनाफे का मौका मिलता है, वे वहीं भाग जाते हैं। यह है यहाँ आज के भारतीय पूँजीपतियों का वर्ग चरित्र जिसमें सीपीआई(एम) अपने 'जनवादी क्रान्ति के सिद्धांत' के अनुसार उनको प्रगतिशील कहती है, उनके खयाल से ये मजदूर वर्ग की मित्रशक्ति हैं। उनके सिद्धांत के अनुसार भारत के राज्य का चरित्र है' बुर्जुआ लैण्डलोर्ड स्टेट हेडेड बाई बिग बुर्जुआजी'। यह बिग बुर्जुआ ही तो है एकाधिकारी पूँजीवादी, लेनिन के शब्दों में, एकाधिकारी पूँजीवाद है राष्ट्रीय पूँजीवाद का सर्वोच्च स्तर। सीपीआई(एम) के वे लैण्डलोर्ड कौन हैं? वे सामंतप्रभु हैं या कुलक या बुर्जुआ? मार्क्सवाद-लेनिनवाद जिस जनगणतांत्रिक क्रान्ति की बात करता है, उस क्रान्ति के सामने मूल दुश्मन के तौर पर रहता है विदेशी साम्राज्यवाद और देशी सामंततंत्र। भारत क्या एक वैसा देश है? भारत में एकाधिकारी पूँजीपतियों का शासन चल रहा है, कारपोरेट सैक्टर का शासन चल रहा है। ये विदेश तक में पूँजी का निर्यात कर खुद ही साम्राज्यवादी हो गये हैं। दुनिया के ताकतवर साम्राज्यवादी देशों के एकाधिकारी पूँजीपतियों के साथ भारतीय पूँजीपतियों का व्यापारिक स्वार्थ में गठजोड़ है। साम्राज्यवाद का विरोध जरा भी भारतीय पूँजीपति वर्ग में नहीं है। द्वन्द्व जो है वह बाजार के बंटवारे को लेकर है। फिर सामंतवाद कहाँ है? सिराजुदौला की कब्र में। असल में क्रान्ति के नाम पर यह सिद्धांत देकर सीपीआई(एम) नेताओं ने भारत के राष्ट्रीय पूँजीपतियों के साथ गहरा रिश्ता बना लिया है, ताकि सरकारी क्षमता में आया जा सके, आखिरकार सत्ता के गलियारों में घूमफिर सकें। इस सिद्धांत के अनुसार वे 'साम्प्रदायिकता' को रोकने के नाम पर केन्द्र में कई बार कांग्रेस का समर्थन कर चुके हैं, फिर तानाशाही का विरोध करने के नाम पर बीजेपी का भी समर्थन किया है। अब जब सीधे न होने पर परोक्ष रूप से कांग्रेस के साथ सांठगांठ में जा रहे हैं। उनकी 'क्रान्ति' के इस हश्र की बात कॉमरेड शिवदास घोष ने बहुत दिनों पहले ही उजागर करके दिखा दी हैं।

सीपीआई(एम) के ईमानदार कार्यकर्ता-समर्थक जरा सोच कर देखें

सीपीआई(एम) के नेता बतायें, 34 साल तक सरकार में रहने के बाद उनकी राजनीति का परिणाम यह क्यों हुआ? उनके नेता मान रहे हैं कि कुछ गलतियाँ हुई हैं। लेकिन क्या वे मान रहे हैं कि उन्होंने सत्ता में रह कर ऐसा एक संत्रास किया है, वोट बूथों पर कब्जे किये हैं, असामाजिक तत्वों से पार्टी बनायी है जिन्होंने हफ्ता वसूली की, दंगे-फसाद किये। कॉलेज चुनावों में किसी विरोधी को खड़ा नहीं होने दिया, 99.9 प्रतिशत बिना प्रतिद्वन्द्विता के जीते। एक वामपंथ नामधारी सरकार ने चटकल मजदूरों को गोलियों से भून डाला, बंदरगाह के मजदूरों की गोली मार कर हत्या कर दी। नन्दीग्राम में किसानों की हत्या की। नादिया में किसानों पर गोलियाँ चलवाई। किसके स्वार्थ में ये सब किया? यही क्या वामपंथ होता है, यही क्या मार्क्सवाद है! इसलिए सीपीआई(एम) के ईमानदार कार्यकर्ताओं से कहूँगा कि उनकी पार्टी पूरी तरह ब्रिटिश लेबर पार्टी जैसी हो गई है। नाम है लेबर, काम करती है ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के स्वार्थ में। मैं जानता हूँ कि सीपीआई के निचले स्तर पर अभी भी वामपंथी कार्यकर्ता हैं। समर्थकों में हैं मैं जानता हूँ। उनकी गणना हम दोस्तों में करते हैं। उन्हें सोच कर देखना होगा कि अगर आप सच्चे मार्क्सवाद और वामपंथ के अनुगामी हैं तो जितना जल्दी हो सके इस नकली मार्क्सवादी पार्टी को छोड़ दें उतना ही बेहतर है। नेतृत्व घोर अधोपतित है, जबकि सारा का सारा दोष कार्यकर्ताओं के मत्थे मढ़ा जा रहा है मानो 34 साल से कार्यकर्ता ही पार्टी चला रहे थे। नेताओं ने जो गलती की है, मार्क्सवाद और वामपंथ को भारी नुकसान पहुँचाया है, यह क्या एक बार भी स्वीकार किया है? वह चरित्र, वह साहस क्या उनमें है? भारत में इस पार्टी के कोष के हिसाब से कांग्रेस, बीजेपी, मायावती की बीएसपी के बाद ही सीपीआई(एम) है। ये सैकड़ों करोड़ रुपये किसने दिये हैं? क्या मजदूर-किसानों ने दिये हैं? ये रुपये कारपोरेट सैक्टर, बिग बिजनेस ने दिये हैं। ये रुपये दिये है कालाबाजारियों ने। इन सब पार्टियों को ये ही चलाते हैं।

एसयूसीआई (सी) के खिलाफ बाकी सब एकजुट

इस बार के पंचायत चुनाव में आप सम्भवत: जानते हैं कि रुपया पानी की तरह बहाया गया है। गाँव में एक सीट जीतने के लिए 2 से 5 लाख तक रुपये खर्च किये गये हैं। एक ब्लॉक सीट पाने के लिए 6-7 करोड़ रुपये तक खर्च किये गये हैं। गाँवों में जाने से बातों-बातों में यह सब तथ्य आप पा जाएंगे। तृणमूल ने तो खर्च किये ही हैं, जहाँ चुनाव लड़ा गया है, वहीं खर्च किये हैं। कई जगह लड़ने ही नहीं दिया गया। सीपीआई(एम) भी पीछे नहीं थी, सीपीआई(एम) ने भी खर्च किये हैं। एक और बात सुनने पर आप हैरान हो जाएंगे। सीपीआई(एम)और तृणमूल की लड़ाई चुनाव को लेकर, सत्ता को लेकर है। फिर जहाँ एसयूसीआई(सी)खड़ी हुई, जीतने की सम्भावना हुई, वहाँ सीपीआई(एम) और तृणमूल एक हो गई। मैंने जयनगर, कुलतली को छोड़ दिया। यहाँ तक कि झाड़ग्राम में हमें एक सीट मिलेगी, नादिया में हर एक गाँव में एक सीट मिलेगी, एसयूसीआई(सी) जीतेगी, वहीं सीपीआई(एम) तृणमूल एक हो जाएगी, जो हमारे पीछे दूसरे नम्बर पर है, उसी को ये परस्पर वोट देंगे। एसयूसीआई(सी) को एक भी सीट पर जीतने नहीं देंगे, बिल्कुल सफाया कर देंगे। यह है बुर्जुआ वर्ग स्वार्थ में उनकी एकता। मजदूर वर्ग और क्रान्तिकारी पार्टी के खिलाफ बुर्जुआ वर्ग स्वार्थ में उनका गठजोड़। हमें पंचायत चुनाव जीतने नहीं देंगे, विधानसभा चुनाव जीतने नहीं देंगे, लोकसभा चुनाव जीतने नहीं देंगे। हमारी पार्टी क्या विधानसभा, लोकसभा, पंचायत पर टिकी है? हमारे एमपी, एमएलए, पंच-सरपंच कोई खास नहीं हैं। होते तब भी नहीं कहता कि हमारे एमपी, एमएलए की संख्या देख कर हमारी पार्टी में आओ। यह पार्टी खड़ी है कॉमरेड शिवदास घोष की क्रान्तिकारी चिन्तनधारा के आधार पर। इसे पाथेय बना कर ही हमारी पार्टी बढ़ रही है, और भी बढ़ेगी। इसी से पूँजीवाद भयभीत है। सीपीआई(एम) के नेता भी यह बात जानते हैं। कांग्रेस बीजेपी तृणमूल भी जानती है। इसलिए एसयूसीआई(सी) के खिलाफ सभी एकजुट हैं। पिछले साल 14 मार्च को दिल्ली की सरजमीं पर हमारी पार्टी के आह्वान पर लाख से ऊपर लोगों की रैली हुई थी। सारा भारत हाजिर था। उसका शानदार अनुशासन, उसके बुलंद आवाज में गुंजते नारों, उसके हर कदम ने दिल्लीवासियों के दिल में एक छाप छोड़ दी है। ऐसा विशाल जुलूस, इस तरह की रैली, यह बुलंद आवाज, यह चरित्र उन्होंने किसी पार्टी के कार्यक्रम में कभी नहीं देखा। दिल्ली में बलात्कार और हत्या को केन्द्र करके हुए स्वत:स्फूर्त आन्दोलन में हमारी पार्टी की दिल्ली यूनिट, दिल्ली का डीएसओ, डीवाईओ, एमएसएस इस संघर्ष में शामिल हुआ। ये क्या हमारे एमपी, एमएलए, पंच-सरपंच की ताकत लड़ी है? इस साल जनवरी महीने में 2-4 तारीख को हमने कर्नाटक की राजधानी बंगलौर में पूरे भारत के मजदूरों का सम्मेलन किया, विशाल सभा की। ये क्या वे जानते नहीं हैं? वे जानते हैं और डरते हैं। जनवरी महीने में ही 29-31 ताारीख को केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम में विशाल महिला सम्मेलन हमने किया। फिर अगस्त में 26 से 29 तारीख तक मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में अखिल भारतीय छात्र सम्मेलन हो रहा है। यह जो उत्तराखण्ड में जो इतनी तबाही मची, एकमात्र हमारी पार्टी ही राहत सामग्री संग्रह कर मेडिकल यूनिट लेकर वहाँ राहत कार्यों में कूद पड़ी है। वहाँ के बुद्धिजीवी, आम लोग श्रद्धा के साथ हमारी प्रशंसा कर रहे हैं। यह सब किस ताकत के जोर पर हो रहा है? कितने संसद सदस्यों को लेकर लेनिन ने क्रान्ति की थी? क्रान्ति के समय भी रूस की संसद में लेनिन की पार्टी के नगण्य सदस्य थे। कितने एमपी, एमएलए लेकर माओ त्से-तुंग ने चीन में, हो ची मिन ने वियतनाम में क्रान्ति की थी? क्रान्ति की थी क्रान्तिकारी आदर्श, महान मार्क्सवाद-लेनिनवाद और उन्नत नैतिकता से लैस यौवन की ताकत के आधार पर। इसी आधार पर हमारी पार्टी बढ़ रही है, इसके आधार पर ही हमारी पार्टी बढ़ेगी। जो ईमानदार लोग हैं, जो विवेकवान लोग हैं वे देश भर में हर जगह पार्टी को आशीर्वाद दे रहे हैं, आशा की एकमात्र किरण के रूप में देख रहे हैं। जो साहसी तेजस्वी युवक हैं, जो अन्याय के खिलाफ उठ खड़े होने का साहस रखते हैं, जो हताश नहीं होते हैं, वही युवक-युवतियाँ झुण्ड के झुण्ड में कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन के परचम तले जुट रहे हैं। छह कार्यकर्ताओं को लेकर कॉमरेड शिवदास घोष ने यात्रा शुरू की थी। रुपया नहीं था, लोग नहीं थे, कोई प्रचार नहीं था। सड़क पर, फुटपाथ पर, पार्क में रहते थे। अविभाजित सीपीआई, आरएसपी, फारवर्ड ब्लाक, व्यंग्य-विद्रुप करते हुए कहा करती थी—चमगादड़ भी पक्षी है, एसयूसीआई भी पार्टी है! एसयूसी पार्टी नहीं, एक क्लब है। कॉमरेड शिवदास घोष एक महान मार्क्सवादी होने के नाते एक दृढ़ प्रतिज्ञा लेकर संघर्ष करते गये। कितने दिन बिना खाना खाये गुजारे। हमने छोटी उम्र में देखा था। आज हमारे जाने पर कॉमरेड आदर सत्कार करते हैं। पार्टी बढ़ रही है। जब खाने बैठता हूँ तो उन दिनों की बात याद आ जाती है, दिल में पीड़ा होती है, खुद के जमीर से बार-बार पूछता हूँ कि कॉमरेड शिवदास घोष का छात्र होने के नाते मैं अपनी भूमिका कितनी निभा रहा हूँ? कॉमरेड शिवदास घोष की जो यह महान क्रान्तिकारी शिक्षा है, वह हम वर्तमान पीढ़ी को दे देना चाहते हैं।

कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षा को तहेदिल से लेते हुए शपथ लेनी होगी—एसयूसीआई(सी) को हम और ताकतवर बनायेंगे, मजबूत करेंगे

भारत में इतना बड़ा संकट है, इतना गहरा संकट इतिहास में कभी नहीं आया। इस संकट से रूबरू होने पर विद्यासागर क्या कहते, रवीन्द्रनाथ, शरतचन्द्र, नजरुल क्या कहते? इस संकट से रूबरू होने पर देशबंधु, लाला लाजपत राय, तिलक, सुभाषचन्द्र क्या कहते? खुदीराम, भगत सिंह, सूर्यसेन, चन्द्रशेखर आजाद क्या कहते? मार्क्सवाद को हथियार बना कर वही बात कह गये हैं कॉमरेड शिवदास घोष। कहा है, जब तक पूँजीवाद रहेगा, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक संकट बढ़ेगा। स्नेह, प्रेम, ममता, प्यार-मोहब्बत, विवेक, हृदयवृति कहने को कुछ नहीं रहेगा। पूँजीवाद सबको तबाह कर दे रहा है। आज जो पार्टियाँ पूँजीवाद की वाहक हैं, वे इस गंदी संस्कृति को भी वहन कर रही हैं। उनकी ताकत जितनी बढ़ रही है उतना ही समाज में संकट बढ़ रहा है, अधोपतन बढ़ रहा है। यहाँ तक कि बूढ़े माता-पिता को बच्चे सड़क पर पटक देते हैं। बेटा रुपये के लिए बाप का गला घोंट कर उसे मार डालता है। ये सब चीजें क्या देश के लोगों ने देखी थी? अभाव में माँ-बाप बच्चों को बेच देते हैं। विवाहित पत्नी को पति बेच देता है। विवाह के नाम पर छल करके बेच देता है। नारी देह को लेकर तो एक बहुत बड़ा कारोबार खड़ा हो गया है।

ये सब चीजें क्या शरतचन्द्र ने देखी थी? रवीन्द्रनाथ ने देखी थी? क्या यही वह आजाद भारत है जिसके लिए कितने शहीदों ने जान कुर्बान की थी? फांसी के तख्ते पर जीवन का जयगान गाया था? क्या यही है आजादी? यह बात आज सोचनी होगी। 5 अगस्त को महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं को दिल में आत्मसात करते हुए हमें दृढ़ प्रतिज्ञा लेनी होगी—पार्टी को हम और भी शक्तिशाली करेंगे, मजबूत करेंगे। उनकी शिक्षाओं से संचालित होकर हम मजदूर वर्ग को, गरीब किसान खेतमजदूरों को संगठित करेंगे। छात्र-नौजवानों और महिलाओं को संगठित करेंगे। जिसे दबाया न जा सके ऐसा जन आन्दोलन गठित करेंगे। आन्दोलन हमने बहुत किये हैं, और भी बहुत आन्दोलन हम करेंगे। एक तरफ आन्दोलन करेंगे और दूसरी तरफ उस

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉ. माणिक मुखर्जी का भाषण...

(पृष्ठ 2 का शेष)

हैं। इन हालात में कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन-विचार, उनकी शिक्षाएं, विभिन्न विषयों का किस तरह मार्क्सीय वैज्ञानिक पद्धति से विश्लेषण कर उन्होंने प्राय मौसम की भविष्यवाणी की तरह पहले ही पूर्व अनुमान लगा लिया था, वह सब उन तक पहुँचाना हमारा लाजिमी फर्ज बनता है। यह वैज्ञानिक विश्लेषण और सम्भाव्यता के आधार पर ही था जिससे उन्होंने ये निष्कर्ष निकाले थे।

इसके साथ ही यह बात सच है कि पूँजीवाद का संकट आज अपनी चरम पराकाष्ठा पर पहुँच गया है। नतीजतन लोग स्वत:स्फूर्त आन्दोलन में सड़कों पर उतर पड़े हैं। वे पूँजीवाद के खिलाफ नारा दे रहे हैं। वे कह रहे हैं, समाजवाद चाहिए। यह शोषणमूलक पूँजीवादी व्यवस्था लोगों को और संतुष्ट नहीं कर पा रही है। उल्टे बेरोजगारी, महंगाई ने उनके जीवन को पंगू और तबाह कर डाला है। मेहनतकश लोग काम की तलाश में झुण्ड के झुण्ड में देश से पलायन करते जा रहे हैं और जिन्दा रहने के लिए धीरे-धीरे हाथ में भीख का कटोरा थामे सड़क पर आते जा रहे हैं। इस व्यवस्था में परिवर्तन के लिए क्रान्ति चाहिए लेकिन जनता को नहीं मालूम कि किस तरह यह हो सकती है। इसलिए हमारा फर्ज है कि उनके पास जाएं और उन्हें दिखा दें कि किस तरह यह शोषणमूलक पूँजीवादी व्यवस्था उखाड़ फेंकने के लिए संघर्ष करना होगा।

कॉमरेडस, भारत में क्रान्ति की वस्तुगत परिस्थिति अत्यंत परिपक्व है। लेकिन सब्जैक्टिव कन्डीशन यह है कि क्रान्ति करने के लिए सही नेतृत्व हमें चाहिए और हालांकि उस क्रान्ति को सही रास्ते पर संचालित करने वाला उपयुक्त नेतृत्व भी कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं से शिक्षित हमारी पार्टी में है, पर भारत जैसे विशाल देश में क्रान्ति के लिए जरूरी ताकत अभी भी हमारी पार्टी की नहीं है, वह हासिल करनी होगी। हमारी पार्टी पूरे भारत में फैल रही है, हम बढ़ रहे हैं, लेकिन अभी हम पर्याप्त ताकत संचित नहीं कर पाये है, जिसके बिना हम क्रान्ति नहीं कर पायेंगे।

इसी वजह से पार्टी के अन्दर दो तरफा संघर्ष करने की जरूरत है। एक तरफ कॉमरेडों को क्रान्तिकारी चरित्र निर्मित करने की कोशिश करते जाना होगा और कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं और विचारों को अपने व्यक्तिगत जीवन और पारिवारिक जीवन में अमल में लाना होगा। दूसरी तरफ जनता के बीच जाकर गहरे दोस्त की तरह उनसे घुलमिल जाना होगा और उनको राजनैतिक तौर पर शिक्षित करना होगा। पार्टी हमसे आशा करती है कि हम जनता को हमारे आत्मीय रिश्तेदारों से भी ज्यादा मानें। एकमात्र इसी के जरिये हम अपना 'मास लाइफ' निर्मित कर सकते हैं। ऐसा होने पर ही क्रान्तिकारी राजनीति, क्रान्तिकारी संस्कृति और नैतिकता के द्वारा जनता को प्रभावित कर पायेंगे। इसी रास्ते हम जल्द ही सारे भारत में न केवल फैल जाएंगे बल्कि क्रान्ति का आह्वान देने लायक जरूरी ताकत तेजी से हासिल कर पायेंगे। ऐसी एक उज्जवल सम्भावना हमारे सामने है। यह सम्भावना वास्तविक है। 5 अगस्त को महान नेता के स्मरण दिवस पर हमें शपथ लेनी होगी कि यह फर्ज निभाने के लिए हम जीजान से कोशिश करेंगे। क्रान्ति दूर नहीं है –यह हमें समझना होगा और दिलोजान से महसूस करना होगा। वर्ना हम इस बात का जनता को यकीन नहीं दिला सकेंगे। अगर हम इन तरीकों का सही-सही ढंग से अनुसरण कर सके तो हम थोड़े ही समय में शोषणमूलक पूँजीवादी व्यवस्था उखाड़ फेंक कर समाजवादी भारत का निर्माण कर सकेंगे। हम इस पार्टी में क्रान्तिकारी बनने के लिए आये हैं। इसलिए कॉमरेडस, हमें प्रतिज्ञा करनी होगी कि हम यह सब हमारे जीवन में हम लागू करेंगे ही। तभी आप सर्वहारा की महान संस्कृति हासिल कर पायेंगे –जो लोगों को आकर्षित करेगी और उन्हें इस देश में क्रान्तिकारी आन्दोलन के भंवर में खींच लायेगी –हम निश्चित ही ऐसा करेंगे। हम ऐसा करने में अवश्य ही सक्षम होंगे। इसलिए कृपया 5 अगस्त के इस अवसर पर इन शिक्षाओं को दिलोजान से लें। और मैं यह शपथ लेने की हरेक से अपेक्षा करता हूँ। इन शब्दों के साथ मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!

एसयूसीआई(सी) जिन्दाबाद!

भोपाल में ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

इसका उद्घाटन मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश आर.डी. शुक्ला ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि उन्हें पक्का यकीन है कि शिक्षा और मानवता पर हमले के खिलाफ छात्र उठ खड़े होंगे।

खुला अधिवेशन

मंच पर फूलों से सजा हुआ महान शहीद चन्द्रशेखर आजाद का चित्र रखा हुआ था। आजादी आन्दोलन में उनकी ऐतिहासिक भूमिका के सम्मान में और इस शहर से संचालित की गई उनकी बहुत सी कार्रवाइयों की याद में उनके नाम पर ही खुले अधिवेशन के सभास्थल का नाम रखा गया था। अधिवेशन की अध्यक्षता एआईडीएसओ के अध्यक्ष कॉमरेड एम एन श्रीराम द्वारा की गई। देवी अहिल्ला यूनिवर्सिटी इन्दौर (म.प्र.) के पूर्व उप कुलपति ए. ए. अब्बासी और दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अनिल सदगोपाल सम्मानित अतिथि थे। प्रो. अब्बासी ने अपने भाषण में कहा कि हाल ही में जब वे चौतरफा व्याप्त पतन से निराश और भ्रमित हो रहे थे तभी उनकी मुलाकात सम्मेलन के लिए प्रचार करते एआईडीएसओ के कार्यकर्ताओं से हुई। इनमें उन्हें आशा की किरण नजर आई। उनका विश्वास लौट आया कि आज भी देश में ऐसे लड़के-लड़कियाँ हैं जो हमारे देश के लगातार गहराते संकट से टकराने और मुकाबला करने का साहस रखते हैं; जो दूसरों से पूरी तरह भिन्न हैं और पतन का नामोनिशान मिटा डालने के लिए खड़े हो सकते हैं। प्रो. अनिल सदगोपाल ने भोपाल गैस त्रासदी के बाद हुए जन आन्दोलन की याद को ताजा कर दिया जिसके दौरान उन्हें जेल में एआईडीएसओ के कार्यकर्ताओं से मेलजोल करने का मौका मिला था। आगे उन्होंने दिखाया कि कैसे पूँजीपति वर्ग के स्वार्थ में सरकारें चाहे यूपीए या एनडीए या किसी और की हों, शिक्षा का निजीकरण-व्यापारीकरण कर रही हैं; किसी उपयुक्त शिक्षा से गरीबों को वंचित कर रही हैं। उन्होंने जुझारू प्रतिरोध का हवाला दिया जो विकसित पूँजीवादी देशों के छात्र शिक्षा पर हमले के खिलाफ कर रहे हैं। स्वागत समिति के उपाध्यक्ष अधिवक्ता अनिल त्रिवेदी ने सम्मेलन के स्मृतिचिन्ह का लोकार्पण किया।

एआईडीएसओ के महासचिव कॉ. सौरभ मुखर्जी ने अपने भाषण में कहा कि लगातार पिछले 6-7 दिनों से हो रही भारी बारिश और राज्य सरकार के विरोध का मुकाबला करते हुए हजारों हजार छात्र भोपाल में इकट्ठा हुए हैं, 8वीं कक्षा तक पास-फेल प्रणाली को दोबारा चालू करने की मांग पर, सैमेस्टर-ट्राइमेस्टर और ग्रेडेशन प्रणाली लागू किये जाने और शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण के खिलाफ, छात्र-शिक्षकों के जनवादी अधिकारों पर हमलों और महिलाओं-छात्राओं पर अत्याचारों के खिलाफ आन्दोलन खड़ा करने के लिए। उन्होंने छात्रों से अपील की कि वे सम्मेलन का संदेश छात्र

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 6 का शेष)

आन्दोलन से क्रान्तिकारी राजनीति को हम जनता के पास ले जाएंगे और ले जाएंगे उन्नत संस्कृति को। कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था, हम अपनी जड़ों से कट गये हैं, आजादी आन्दोलन के जमाने में निर्मित उन्नत जो सांस्कृतिक सुर था, उस सांस्कृतिक सुर से हम विछिन्न हो गये हैं। इस पूँजीवाद ने हमें उससे काट दिया है। इसीलिए विद्यासागर, इसीलिए रवीन्द्रनाथ, शरतचन्द्र, नजरुल, इसीलिए खुदीराम भगतसिंह चन्द्रशेखर अश्फाकउल्ला सुभाषचन्द्र प्रीतिलता–इनके स्मरण दिवस हम मना रहे हैं। किस लिए? उस भूली हुई याद को तरोताजा करना, नौजवानों को कहना–तुम्हें खुदीराम बनना होगा, भगत सिंह बनना होगा, प्रीतिलता बनना होगा। लेकिन आदर्श होगा नया। उन दिनों था राष्ट्रीयतावादी आदर्श, साम्राज्यवाद के खिलाफ राष्ट्रीय एकता, अमीर-गरीब, मालिक-मजदूर मिल कर। आज वही मालिक अत्याचारी शोषक हैं। इसलिए उसके खिलाफ आज राष्ट्रीयतावाद लेकर संघर्ष नहीं चल सकता। आज चाहिए मार्क्सवाद लेनिनवाद शिवदास घोष चिन्तनधारा। एकमात्र इसी रास्ते ही मुक्ति हासिल कर सकेंगे। यह सन्देश हम पहुँचा देंगे और अतीत काल के मनीषियों, महान क्रान्तिकारियों को याद करेंगे तथा उसके आधार पर ही फिर नये सिरे से इन्सानियत को जगाने का आन्दोलन गठित करेंगे। यह बात कह कर आज मैं यहीं समाप्त करता हूँ।

समुदाय तक ले जायें और दीर्घस्थाई आन्दोलन गठित करें। एसयूसीआई(सी) के वरिष्ठ पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉ. रणजीत धर जो शुरूआत में एसयूसीआई(छात्र ब्यूरो) से जुड़े हुए थे और एआईडीएसओ के संस्थापक सदस्य भी रहे, उन्होंने अपने भाषण में कहा कि उस समय यह बहुत ही छोटा संगठन था जिसकी व्यापक सदस्यता और कोई मान्यता नहीं थी। इसे संयुक्त सभाओं में एआईएसएफ, एसबी, पीएसयू जैसे अन्य बड़े संगठनों से अपने अधिकारों के लिए डट कर लड़ना पड़ता था। उस शुरूआती दौर में कॉमरेड शिवदास घोष का गहरा प्यार, देखभाल, स्नेह और बहुत उन्नत नैतिक-सांस्कृतिक स्तर ही था जो कॉमरेड धर जैसे छात्रों को संगठन में खींच लाया। अब एआईडीएसओ देश भर में फैल चुका है। यह केवल कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों और शिक्षाओं की बदौलत ही मुमकिन हो सका। वही थे जिन्होंने हमें सिखाया कि छात्र-नौजवानों की सक्रिय भागीदारी के बिना क्रान्ति नहीं हो सकती और क्रान्तिकारी राजनीति की प्राणसत्ता नीति-नैतिकता व संस्कृति के उसके उच्च

स्तर में निहित होती है। कॉमरेड रणजीत धर ने छात्रों से क्रान्ति करने के लायक बनने और उस उच्च सांस्कृतिक स्तर को हासिल करने की अपील की।

एसयूसीआई(सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य और एआईडीएसओ के अन्यतम संस्थापक सदस्य कॉमरेड असित भटाचार्य ने एआईडीएसओ की वेबसाइट पर लॉग ऑन करने के लिए बटन दबाया। कॉ. असित भटाचार्य ने अपने भाषण में बताया कि एआईडीएसओ ने अपनी शुरूआत से ही छात्र आन्दोलन छेड़े हैं। 1950 में जब केन्द्र सरकार ने शिक्षित बेरोजगारों की संख्या कम करने के मकसद से शिक्षा में कटौती की तो यह एआईडीएसओ ही था जिसने पूरी दृढ़ता के साथ जुझारू आन्दोलन छेड़ा था। आज शिक्षा पर हमला हो रहा है, निजीकरण-व्यापारीकरण किया जा रहा है। जब हमारी कुल आबादी का 70% हिस्सा 20 रुपये रोजाना खर्च करने की भी क्षमता नहीं रखता है, तब फीस में इतनी भारी बढ़ोतरी की जा रही है। इससे गरीब परिवारों से आने वाले छात्रों के लिए शिक्षा के दरवाजे पूरी तरह बंद हो जाएंगे। उन्होंने एआईडीएसओ कार्यकर्ताओं से पूरी ताकत के साथ इस घिनौनी साजिश का प्रतिरोध करने की अपील की।

एसयूसीआई(सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य और एआईडीएसओ के अन्यतम संस्थापक सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने मुख्य वक्ता के रूप में सम्मेलन को सम्बोधित किया। उनका भाषण अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

प्रतिनिधि अधिवेशन

सम्मेलन का प्रतिनिधि अधिवेशन 'शहीद भगत सिंह मंच' (रेलवे कम्युनिटी हाल, भोपाल) में आयोजित किया गया। 27 अगस्त की सुबह कॉ. एम.एन. श्रीराम द्वारा एआईडीएसओ का झण्डा फहराया गया। अखिल भारतीय नेताओं ने शहीद वेदी पर माल्यार्पण किया। दो हजार से

(शेष पृष्ठ 8 पर)

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing :20 Sept, 2013

भोपाल में एआईडीएसओ...

(पृष्ठ 7 का शेष)

अधिक प्रतिनिधि मौजूद थे जिन्होंने मूल प्रस्ताव के प्रारूप और सांगठनिक रिपोर्ट पर चर्चा में भाग लिया। जो प्रस्ताव पास किये गये उनमें महिलाओं पर अत्याचार, सीरिया पर हमले की साम्राज्यवादियों की धमकी, अंधविश्वास-विरोधी कार्यकर्ता और रेशनलिस्ट डा. नरेन्द्र दाबोलकर की निर्मम हत्या और शहीदों की सूची में भगत सिंह का नाम शुमार न करने के केन्द्र सरकार के फैसले की निन्दा करने इत्यादि प्रस्ताव शामिल थे। सम्मेलन ने 36 सदस्यीय मजबूत अखिल भारतीय कार्यकारिणी और 77 सदस्यीय अखिल भारतीय परिषद का चुनाव किया जिसमें कॉमरेड कमल सेन को अध्यक्ष और कॉमरेड अशोक मिश्रा को महासचिव चुना गया।

प्रतिनिधि अधिवेशन को एसयूसीआई(सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती, एसयूसीआई(सी) की केन्द्रीय कमेटी सदस्य और एआईडीएसओ की पूर्व महासचिव कॉ. छाया मुखर्जी, भोपाल के वरिष्ठ पत्रकार एच.एल. हृदय, गुजरात के जानेमाने मानवाधिकार कार्यकर्ता श्रुभाई मिस्त्री और स्वागत समिति के उपाध्यक्ष जी.एस. आशीवाल ने सम्बोधित किया।

1970 के दशक में एआईडीएसओ की महासचिव रही कॉ. छाया मुखर्जी ने प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा : मैं पश्चिम बंगाल में अपने स्कूली दिनों से ही एआईडीएसओ से जुड़ी रही हूँ। उस समय छात्र आन्दोलन मुख्यत: वाम केन्द्रित हुआ करते थे। हालांकि उस समय हम इतने ताकतवर नहीं थे लेकिन कॉमरेड शिवदास घोष के महान विचारों और शिक्षाओं के आधार पर हम बहुत से छात्रों को आकर्षित कर सके थे और बहुत से कॉलेजों में यूनियन बना सके थे। लेकिन अब तो छात्र आन्दोलन और कॉलेज यूनियन चुनावों के नाम पर जो हो रहा है, वह है गुण्डागर्दी, बल प्रयोग, आतंक फैलाना और हर रंग की प्रमुख वोट आधारित पार्टियों द्वारा समर्थित मात्र क्रूर बल के आधार पर यूनियनों पर कब्जा जमाना। इसके साथ-साथ शासक पूँजीपति वर्ग द्वारा लगातार कोशिश की जा रही है कि न केवल शिक्षा को उसके सारतत्व से महरूम कर दिया जाए, शिक्षा के अवसरों में कटौती की जाए, शिक्षा का निजीकरण-व्यापारीकरण किया जाये बल्कि अश्लीलता, बेहूदगी, यौन विकृति को सतत प्रचारित करने और कैरियरमुखी सोच पैदा करने के जरिये छात्रों की नैतिक रीढ़ तोड़ दी जाए ताकि वे प्रतिवाद की ताकत से वंचित हो जाएं और खुदीराम भगत सिंह सुभाषचन्द सरीखे महान चरित्रों की परम्परा का निर्वाह करने लायक न रहें। यह एआईडीएसओ की जिम्मेदारी बनती है कि वह सही वैज्ञानिक, जनवादी व धर्मनिरपेक्ष शिक्षा की मांग पर छात्र आन्दोलन की नई लहर खड़ी करे तभी बढ़ते अपराध, हिंसा, महिलाओं पर अत्याचार, बड़ों के प्रति तिरस्कारपूर्ण रवैये और ऐसी ही अन्य सामाजिक बुराइयों पर रोक लगाई जा सकती है।

एसयूसीआई(सी) के हमारे प्रिय महासचिव और एआईडीएसओ के अन्यतम संस्थापक सदस्य कॉमरेड प्रभाष घोष प्रतिनिधि अधिवेशन के मुख्य वक्ता थे। कॉमरेड प्रभाष घोष का भाषण बाद के अंक में छापा जाएगा।

शुरूआत में एक शोक प्रस्ताव उन सब की याद में ग्रहण किया गया जिन्होंने आजादी आन्दोलन व जनवादी जन आन्दोलनों में अपने प्राण न्योछावर किये हैं। शिक्षा पर हमले को रोकने के दृढ़ संकल्प के साथ सम्मेलन का समापन हुआ।

निर्मम हत्याओं व जनसंहार को अंजाम देने के लिए नरेन्द्र मोदी के इस्तीफे, उस पर सार्वजनिक मुकदमा चलाने व सख्त सजा देने की एसयूसीआई(सी) ने की मांग

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 8 सितम्बर को निम्नलिखित बयान जारी किया:

फर्जी मुठभेड़ों के एक सिलसिले की साजिश रचने के आरोप में लगभग सात साल से फिलहाल जेल में बंद डीजी रैंक के आईपीएस अफसर बंजारा ने अपने विस्फोटक त्यागपत्र में चौंकाने वाले सत्य का खुलासा किया है जिसे पहले भी आर.बी. श्रीकुमार और संजीव भट्ट जैसे अन्य आईपीएस अफसरों द्वारा बताया जा चुका है। इसमें 2002 के अल्पसंख्यक-विरोधी जघन्य जनसंहार में गुजरात के बीजेपी मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के सीधे संलिप्त होने और चुनिन्दा बेकसूर अल्पसंख्यकों के साथ-साथ अपने घोर-विरोधियों को खत्म कर देने के लिए फर्जी मुठभेड़ें करवाने के उसके निर्देशों की ही पुष्टि हुई है। यह घोर निन्दनीय है कि मोदी जैसे एक आदमी को जो एक घोर साम्प्रदायिक तत्व है, जो बिना किसी संकोच के निरीह लोगों को मारने की प्रवृत्ति रखता है और जो आज भी जनसंहार को जायज ठहराने की हिमाकत दिखाता है उसे ही उसकी सरकार के साथ-साथ उसके आकाओं संघ परिवार और आरएसएस तथा शासकवर्ग के एक प्रभावशाली तबके द्वारा देश के अगले प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश किया जा रहा है।

पहली नजर में उसके द्वारा मानवजाति के खिलाफ जघन्य अपराध के आरोप स्थापित हो जाने के मद्देनजर हम पुरजोर मांग करते हैं कि नैतिक आधार पर उन्हें तुरन्त गद्दी छोड़ देनी चाहिए, उन पर सार्वजनिक मुकदमा चलाया जाये और निर्मम हत्यारे के रूप में सख्त से सख्त सजा दी जाए।

हम देश के लोगों का आह्वान करते हैं कि वे इस मांग के समर्थन में खड़े हों और एक घोर अपराधी और हत्यारे को प्रधानमंत्री के रूप में देश पर थोपने की शासक पूँजीपति वर्ग की साजिश को नाकाम करने के लिए जोरदार आन्दोलन गठित करें।

आशा वर्करों की मांगों पर केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री को ज्ञापन सौंपा

दिल्ली : आशा वर्करों की विभिन्न मांगों पर यहाँ 29 अगस्त को एआईयूटीयूसी के उपाध्यक्ष कॉ. के. राधाकृष्ण और संगठन की कर्नाटक राज्य सचिव कॉ. डी. नागालक्ष्मी, पश्चिम बंगाल से पूर्णचन्द्र बेरा व कृष्णा प्रधान, यूपी से बालिन्द्र कटियार व अर्चना भोंसले, दिल्ली से राजबाला व ममता राव और हरियाणा से राज बाला यादव को लेकर एआईयूटीयूसी की ऑल इण्डिया कमेटी की ओर से एक प्रतिनिधि मण्डल केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री से मिलने गया। पूर्वसूचना देने के बावजूद उनके न मिलने पर प्रतिनिधि मण्डल ने मंत्री को सुपर्द करने के लिए एक ज्ञापन आफिसर ऑन स्पेशल ड्युटी को दिया। अधिकारी को दिये ज्ञापन और बातचीत में आशा वर्करों की विभिन्न मांगें उठाई गई जैसे कि आशा वर्करों को सरकारी कर्मचारी का दर्जा दिया जाए, अन्य सभी हितलाभों सहित तय न्यूनतम वेतन दिया जाए, तब तक जो इन्सेंटिव या प्रोत्साहन राशि दी जाती है वह रिवाइज की जाए, जो पिछले 7 साल से उतनी ही है, आशा वर्करों के लिए प्रोत्साहन राशि व सामाजिक सुरक्षा देने की प्रक्रिया सरल, पारदर्शी बनायी जाए, आदि। अधिकारी ने इस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया।

बिजली दर वृद्धि के खिलाफ प्रदर्शन

आरोन (म.प्र.) : बिजली वितरण कम्पनी द्वारा नगर में लगाये मीटरों से लोगों के घरेलू बिजली बिलों में काफी इजाफा हुआ है। इसके खिलाफ 12 सितम्बर को एआईडीवाईओ संगठन की ओर से कड़ा प्रतिवाद करते हुए एक प्रदर्शन किया गया। नौजवानों द्वारा बिजली वितरण कम्पनी के कार्यालय का घेराव भी किया गया। बिजली बिल जमा कराने के लिए दो काउण्टर खोलने और उन पर छाया का प्रबंध करने और बिजली एक्ट 2003 रद्द करने की मांग की गई। एसयूसीआई (सी) के कॉमरेड मनीष श्रीवास्तव ने प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित किया। सभा का संचालन डीवाईओ के गोपाल नायक ने किया।

बिजली की अनियमितता और मनमाने बिलों के खिलाफ
महुआ में रोषपूर्ण प्रदर्शन व घेराव

वैशाली (बिहार): 23 अगस्त को विद्युत संघर्ष समिति महुआ द्वारा समिति संयोजक ललित कुमार घोष एवं समाजसेवी सुमित सहगल के नेतृत्व में विद्युत सब-स्टेशन कार्यालय महुआ के समक्ष रोषपूर्ण प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन विद्युत कार्यालय पहुँचकर सभा में तब्दील हो गया जिसकी अध्यक्षता एसयूसीआई(सी) संभल सचिव विश्वनाथ साहू ने की। प्रदर्शनकारियों के आते ही कनिष्ठ अभियन्ता सहित सभी कर्मचारी कार्यालय में घुस गए, जिससे आक्रोशित प्रदर्शकारियों ने कार्यालय का घेराव किया। अधिकारियों के काफी अनुनय-विनय के बाद घेराव खोला गया। तत्पश्चात कनिष्ठ विद्युत अभियन्ता ने 11 सूत्री मांग पत्र लिया। प्रदर्शनकारियों को अनेक विवेकशील व्यक्तियों ने सम्बोधित किया।

गिरफ्तारी की मांग को लेकर भूख हड़ताल

मुरादाबाद (उ.प्र.): तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय (टीएमयू) की एमबीबीएस छात्रा नीरज भड़ाना के हत्यारे नामजद अभियुक्त वि.वि. के कुलाधिपति सुरेश जैन व उसके बेटे मनीष जैन व उनके साथियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर चलाए जा रहे आन्दोलन के क्रम में 31 अगस्त को जिलाधिकारी मुरादाबाद के कार्यालय के सामने एक दिवसीय भूख हड़ताल का आयोजन किया गया। भूख हड़ताल पर एआईडीवाईओ के पांच नेता कॉ. गाभा सिंह, कॉ. मो. गौरी, कॉ. राजेन्द्र सिंह, कॉ. नासिर अली व कॉ. प्रदीप अहलूवालिया बैठे। घोषणा की कि जब तक हत्यारों की गिरफ्तारी नहीं होती है तब तक हमारा आन्दोलन जारी रहेगा। एआईडीवाईओ द्वारा शुरू किए गए इस आन्दोलन में अब शहर में प्रदेश के 21 सामाजिक राजनैतिक, ट्रेड यूनियन महिला संगठन आदि जुड़ चुके हैं। भूख-हड़ताल पर आयोजित सभा को जानेमाने साहित्यकार, चित्रकार एवं अन्य विवेकशील लोगों ने सभा को सम्बोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता व संचालन संगठन के उ.प्र. राज्य अध्यक्ष कॉ. हरकिशोर सिंह ने किया। कार्यक्रम के दौरान एक ज्ञापन माननीय प्रधानमंत्री के नाम एक पत्र जिलाधीश को सौंपा गया।

यूथ कैम्प का आयोजन

बलिया : 25 अगस्त को एआईडीवाईओ जिला कमेटी बलिया के द्वारा बलिया जिले के नगरा ब्लाक के अर्न्तगत डाक बंगले पर जिला स्तरीय यूथ कैम्प लगाया गया, जिसमें लगभग 150 लोगों ने भाग लिया। पहले पूरे बाजार में जूलुस निकाला गया। मुम्बई में महिला पत्रकार के साथ हुए गैंग रेप के दोषियों को फाँसी दो, शराब के उत्पादन व बिक्री पर रोक लगाओ, सभी बेरोजगारों को काम दो अथवा जीने लायक बेरोजगारी भत्ता दो, महिलाओं की सुरक्षा की गारंटी दो आदि नारे लगाये। इसका नेतृत्व संगठन के राज्य सचिव रविशंकर मौर्य, जिला सचिव मुन्ना शर्मा, जिला अध्यक्ष नितिन कुमार, जिला कमेटी सदस्य रामप्रवेश, मकरध्वज, कुबेर चौहान आदि ने किया। कैम्प में बेरोजगारी व अश्लीलता की समस्या पर वाद-विवाद प्रतियोगता हुई। राजनैतिक प्रश्नों के उत्तर एआईडीवाईओ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का. दीपक कुमार ने दिये। कैम्प में खेल-कूद व सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये। कार्यक्रम की अध्यक्षता एआईडीवाईओ के जिला अध्यक्ष का. नितिन कुमार ने की।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष:011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com; sarvaharadrishtikon@yahoo.com